

संग्रहकर्त्ता—

त्रिवेणीलाल श्रीवास्तव, बी० ए०

प्रकाशक—

'चाँद' कार्यालय,

इलाहाबाद

अप्रैल, १९३०

प्रथम बार, २०००] [मूल्य १)



१

अफसर—क्यों जी, तुम फिर काम के वक्त सो रहे हो?

क्लर्क—क्या करूँ साहब, कल रात भर मेरे बच्चे ने मुझे सोने नहीं दिया।

अफसर—तब बेहतर तो यही है कि तुम यहाँ अपने बच्चे को लेकर आया करो।

२

लल्लू मोहन से रुपया उधार लेने की बातें कर रहा था और मोहन उससे ६ रुपया सैकड़ा ब्याज माँग रहा था। लल्लू को यह रकम अधिक मालूम हुई और उसने मोहन से कहा—खैर, मुझे इसमें कोई आपत्ति नहीं, पर तुम्हारे पुरखा स्वर्ग से जब देखेंगे कि तुम इतना ब्याज ले रहे हो, तब वे तुम्हें क्या कहेंगे?

मोहन ने कहा—तुम इसकी चिन्ता न करो। उतनी दूर से ६ उन्हें ३ ही दिखाई पड़ेंगे।

३

सोहन—जब मैं बीमार था, तब मुझे देखने के लिए तीन तीन डॉक्टर लगे थे, परन्तु तीनों की मेरे बारे में विचित्र ही राय थी।

मोहन—किसी बात में भी उनकी एक राय थी या नहीं ?

सोहन—थी, तीनों अपनी-अपनी 'विज़िटिङ्ग फी' ३२ रुपए माँग रहे थे !

४

[स्थान—नाट्यशाला]

एक अङ्गरेज़-महिला—(अपने पीछे बैठे हुए एक दर्शक से) आशा है कि मेरे हैट की वजह से आपको कोई परेशानी न होती होगी।

दर्शक—जी हाँ, होती है। मेरी धर्मपत्नी भी ऐसे ही हैट के लिए मुझे बार-बार तङ्ग किया करती है।

५

आलसी मजदूर—सरकार, मेरा दिल मेरे काम में ही लगा है।

मालिक—दिल के साथ साथ अपने हाथों को भी काम में लगाओ, तो अच्छा हो !

६

गन्नू—(एक निठल्ले आदमी से) आज तुम इतने उदास क्यों दीखते हो?

आदमी—एक आदमी ने अभी एक दूसरे आदमी को झूठा कह दिया। दूसरे ने कहा कि तुम इसके लिए माफी न माँगोगे तो झगड़ा हो जायगा।

गन्नू—तो इसमें तुम्हारा क्या बिगड़ा?

आदमी—पहले आदमी ने उससे माफी माँग ली।

७

"बाबा, इस गरीब अन्धे को एक पैसा दे दो।"

"पर तुम तो एक ही आँख से अन्ध हो।"

"तो एक अधेला ही दे दो।"

८

एक छोटा सा लड़का बीड़ी पी रहा था। एक महिला ने उसे देख कर कहा—तुम्हारे बाप जानते हैं कि तुम बीड़ी पीते हो?

लड़के ने दो तीन फूँक लगा कर उस स्त्री को बड़े गौर से देखा और बोला—तुम तो एक विवाहिता स्त्री होगी?

स्त्री—हाँ, हूँ तो।

लड़का—तुम्हारे पति जानते हैं कि तुम दूसरे से बात करती हो?

९

एक सेनापति बहुत देर तक अपनी सेना के जवानों को उनके कर्त्तव्य के विषय में उपदेश देता रहा। थोड़ी देर में एक सिपाही से उसने पूछा—क्यों, वीर सिपाहियों को क्यों सदैव देश पर मरने के लिए तैयार रहना चाहिए?

सिपाही—बेशक, भला उसे क्यों नाहक मरने के लिए तैयार रहना चाहिए?

१०

दो लड़की बैठ कर अपने-अपने जेवरों की शेखी हाँक रही थीं। एक ने अपनी अमीरी दिखाते हुए कहा—मैं अपने बेसर को दूध से साफ करती हूँ। अपने चन्द्रहार को अङ्गूर के सिरके से, दुलरी को गुलबकावली के पानी से और सखी तुम क्या करती हो?

दूसरी—मैं साफ नहीं करती—जब वे मैले हो जाते हैं, तब उन्हें नौकरानी को देकर दूसरे बनवा लेती हूँ।

११

एक सज्जन रेलगाड़ी के पहले दर्जे के एक डब्बे में यात्रा कर रहे थे। उन्हें फतेहपुर उतरना था। गाड़ी वहाँ सवेरे पाँच बजे पहुँचती थी, पर वे सज्जन इस बुरी तरह से सोने वाले थे कि उन्हें उम्मीद नहीं थी कि उनकी नींद फतेहपुर में टूट जायगी, इसके लिए उन्होंने कई उपाय

सोचे, पर कोई भी ठीक न जँचा। अन्त में उन्होंने एक तरकीब ढूँढ निकाली। अपने नाम से एक बैरङ्ग चिट्ठी लिख कर गाडी के ही लेटर-बॉक्स में छोड दी और पते में लिख दिया—'इसी गाडी के पहले दर्जे में मुसाफिरी करने वाले अमुक सज्जन को फतेहपुर में मिले।' फतहपुर आते ही रेल के डाकिए ने वहाँ पहुँच कर आवाज दी और वह बैरङ्ग चिट्ठी दिखाई। सज्जन ने अपना असबाब नीचे उतरवाते हुए कहा—मैं इसे नहीं लूँगा। लोगों में ऐसी लापरवाही मैं नहीं बढाना चाहता।

१२

"डॉक्टर साहब, मैंने सुना है कि आपके पास जो लोग मरीज ढूँढ कर लाते हैं, उन्हें आप कमीशन देते हैं?

डॉक्टर—हाँ, देता तो हूँ। क्या तुम भी कोई मरीज लाए हो?

"जी हाँ!"

"कहाँ है?"

"मैं ही हूँ!"

१३

एक आदमी उदासी के साथ बडी देर तक एक स्थान पर टहल रहा था। लोगों को देख कर उस पर दया आई और उन्होंने हँसी के तौर पर कहा—चलो जी, तुमको

तुम्हारे घर पहुँचा देंगे, ताकि तुम्हारी स्त्री से तुम्हारा मन बहल जाय।

उसने कहा—महाशय जी, क्षमा कीजिएगा। वहीं से ही तो यह दुर्भाग्य आरम्भ हुआ है।

१४

एक—(सरकस में) शाबाश, देखो तो गधे को, क्या सफाई दिखा रहा है। मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता।

दूसरा—तुम अभी सिखाए हुए नहीं हो।

१५

एक शिक्षक अपनी कक्षा में दया की शिक्षा दे रहे थे। उन्होंने एक विद्यार्थी से पूछा—क्यों रामू, अगर कोई आदमी एक गधे को पीट रहा हो और मैंने यदि उस आदमी को ऐसा काम करने से मना कर दिया, तो मैंने कैसा बर्ताव किया?

रामू—भाई जैसा।

१६

"भाई, मैं तो अब ज्योतिषियों की बातों पर विश्वास करने लगा हूँ।"

"क्यों?"

"कल उसने मुझे कहा कि निकट भविष्य में ही तुम्हें कुछ आर्थिक हानि होगी और वह हो ही गई।"

"कैसे ?"

"उसने मेरे ग्रह नक्षत्र बिगड़े बता कर उनको शान्त करने के लिए मेरी माँ से बहुत से पैसे हड़प लिए।"

१७

ऋणी—भाई, माफ करना। इस हफ्ते में तुमको कुछ न दे सकूँगा।

महाजन—यही तो तुमने गत सप्ताह भी कहा था।

ऋणी—मैं एक बात का आदमी हूँ।

१८

शिक्षक—सोहन, तुम ऑस्ट्रेलिया के किसी ऐसे जानवर का नाम बता सकते हो, जो बड़ा विचित्र हो।

सोहन—गैंडा।

शिक्षक—गलत, गैंडा तो वहाँ होता भी नहीं।

सोहन—इसी से तो वह वहाँ के लिए विचित्र होगा, क्योंकि गैंडा ऑस्ट्रेलिया में नहीं होता।

१९

"क्यों महाशय जी, आप एक गरीब को एक रोटी के लिए दो पैसे दे सकते हैं ?"

"दो पैसे क्यों ? एक रोटी तो एक ही पैसे में मिल जाती है।"

तुम्हारे घर पहुँचा देंगे, ताकि तुम्हारी स्त्री से तुम्हारा मन बहल जाय।

उसने कहा—महाशय जी, क्षमा कीजिएगा। वहीं से ही तो यह दुर्भाग्य आरम्भ हुआ है।

१४

एक—(सरकस में) शाबाश, देखो तो गधे को, क्या सफाई दिखा रहा है। मैं ऐसा कभी नहीं कर सकता।

दूसरा—तुम अभी सिखाए हुए नहीं हो।

१५

एक शिक्षक अपनी कक्षा में दया की शिक्षा दे रहे थे। उन्होंने एक विद्यार्थी से पूछा—क्यों रामू, अगर कोई आदमी एक गधे को पीट रहा हो और मैंने यदि उस आदमी को ऐसा काम करने से मना कर दिया, तो मैंने कैसा बर्ताव किया?

रामू—भाई जैसा।

१६

"भाई, मैं तो अब ज्योतिषियों की बातों पर विश्वास करने लगा हूँ।"

"क्यों?"

"कल उसने मुझे कहा कि निकट भविष्य में ही तुम्हें कुछ आर्थिक हानि होगी और वह हो ही गई।"

"कैसे ?"

"उसने मेरे ग्रह नक्षत्र बिगड़े बता कर उनको शान्त करने के लिए मेरी माँ से बहुत से पैसे हड़प लिए।"

१७

ऋणी—भाई, माफ करना। इस हफ्ते में तुमको कुछ न दे सकूंगा।

महाजन—यही तो तुमने गत सप्ताह भी कहा था।

ऋणी—मैं एक बात का आदमी हूँ।

१८

शिक्षक—सोहन, तुम ऑस्ट्रेलिया के किसी ऐसे जानवर का नाम बता सकते हो, जो बड़ा विचित्र हो।

सोहन—गैंडा।

शिक्षक—गलत, गैंडा तो वहाँ होता भी नहीं।

सोहन—इसी से तो वह वहाँ के लिए विचित्र होगा, क्योंकि गैंडा ऑस्ट्रेलिया में नहीं होता।

१९

"क्यों महाशय जी, आप एक गरीब को एक रोटी के लिए दो पैसे दे सकते हैं ?"

"दो पैसे क्यों ? एक रोटी तो एक ही पैसे में मिल जाती है।"

"मिल तो जाती है , पर मैं विना घी के रोटी नहीं खा सकता।"

२०

मास्टर साहब हमेशा अपनी घडी को अपने वेस्ट-कोट की दाहिनी जेब में रक्खा करते थे। एक दिन उन्हें वहाँ घडी नहीं मिली। उन्होंने क्लास के एक लडके को उसे घर से ढूँढ कर लाने के लिए कहा। लडका जा ही रहा था इतने में मास्टर साहब ने अपना हाथ बाएँ जेब में डाला, वहाँ से घडी निकाली और देख कर कहा—देखो जी, अभी दो बज कर दस मिनिट हैं, अढ़ाई बजे तक जरूर लौट आना।

२१

पति—आज कल की औरतों का फैशन देख कर मैं तो ठण्ढा पडा जाता हूँ।

पत्नी—और मेरी भी यही दशा है, प्यारे! मेरे लिए एक ओवर कोट बनवा देना।

२२

मेजिस्ट्रेट—अजी मैं तुम पर रहम क्यों करूँ? तुम्हारा यह पहला अपराध तो है नहीं।

अपराधी—लेकिन हुजूर, मेरे वकील साहब का तो यह पहला ही मुकदमा है।

२३

मालिक—(नौकर से) मेरे साले साहब अपनी बहिन को लिवाने आने वाले हैं। तुम शाम को स्टेशन जाना, और खर्च के लिए ये आठ आने पैसे ले जाओ।

नौकर—और सरकार, वे न आएँ तो ?

मालिक—तब तुमसे म एक रुपया लूँगा।

२४

व्याख्यानदाता—आज सवेरे मेरे व्याख्यान में लोगों को खाँसी बहुत आ रही थी।

मित्र—खाँसी नहीं थी। व्याख्यान खतम कराने की सूचना थी।

२५

व्याख्यानदाता—लेकिन आज के व्याख्यान का दाम पहले ही वसूल कर लेना चाहिए।

"क्यों ?"

"क्योंकि आज 'कमखर्ची' पर बोलना है।"

२६

जज—(अपराधी के एक गवाह से) तुम अपराधी को उसके जन्म से ही जानते हो। नहीं तो तुम उसका चाल-चलन बता सकते हो ? क्या तुम यह कह सकते हो कि उसने चोरी की है ?

गवाह—जी हाँ, पर यह नहीं बता सकता कि उसने कितना चुराया था।

२७

जज—तुमको जूरी ने निरपराध करार दिया। तुम अब घर जा सकते हो।

अभियुक्त—सरकार, जरा खुलासा कर दीजिए।

जज—क्या ?

अभियुक्त—छोटा या बड़ा ?

२८

एक नौजवान—(एक मैजिस्ट्रेट से) मैंने एक तीतर पकड़ा है, आप उसे तीन रुपए में खरीदेंगे ?

मैजिस्ट्रेट—जरूर खरीदूँगा। कहाँ पकड़ा है ?

नौजवान—आपके बगीचे में।

मैजिस्ट्रेट—मेरी इजाजत बिना बगीचे में घुस आने के लिए मैंने तुम्हारे ऊपर पाँच रुपए जुरमाना किया, इसलिए तीतर और दो रुपए रख जाओ।

२९

मैजिस्ट्रेट—इसके पहले तुमको कितनी बार सजा मिल चुकी है ?

अपराधी—पाँच बार।

मैजिस्ट्रेट—फिर भी तुम बाज न आए। इस बार तुमको मैं कड़ी से कड़ी सजा दूँगा।

अपराधी—सरकार, 'स्थायी ग्राहकों' के साथ आप कुछ रियायत न करेंगे?

३०

अमेरिका में विवाह हो जाने पर नए प्रेमी प्रेमिका इस भाँति रहते हैं—पहले सप्ताह में प्रेमी बोलता रहता है, प्रेमिका सुनती रहती है, दूसरे सप्ताह में प्रेमिका बोलती रहती है, प्रेमी सुनता रहता है, तीसरे सप्ताह में दोनों अपनी बीती तलाक कचहरी के जज को सुनाते हैं।

३१

दो नवोढ़े एक बार अपनी अपनी स्त्री को लेकर एक ही सराय में ठहरे हुए थे। दोनों में मित्रता हो गई। एक बार फिर किसी शहर के एक भोजनालय में उन दोनों नवोढ़ों में भेंट हुई। एक ने दूसरे से पूछा—कहो मित्र, तुम्हारी धर्मपत्नी का क्या हाल चाल है?

दूसरा—वह तो स्वर्ग की अप्सरा है।

पहला—तुम बड़े भाग्यशाली हो। मेरी तो अब भी जीती है।

३२

दो चोर अपने अपने चोरी के माल का अन्दाजा लगा रहे थे।

पहले चोर ने कहा—मैंने जिस मकान को बतलाया था, वहाँ तुमको कुछ भी न मिल सका ?

दूसरा—कुछ भी नहीं। घर के दोनों आदमियों को मैंने एक ही कमरे में, एक ही खाट पर सोए देखा, तो समझ गया कि वे जरूर गरीब आदमी होंगे। इनके पास कुछ भी न होगा।

३३

एक नामी पहलवान की एक आँख में और सिर में बड़ी चोट आ गई थी। वह एक डॉक्टर के पास गया। डॉक्टर ने पूछा—किसी कुश्ती में चोट आ गई होगी ?

पहलवान बोला—मेरे जोड़ का यहाँ कोई भी पहलवान नहीं है।

डॉक्टर—फिर ?

पहलवान—आज घर जाने में कुछ देरी हो गई, इसलिए मेरे घर में ही मेरी यह हालत कर दी गई।

३४

एक भले आदमी ने एक दर्जी से कुछ कपड़े सिलवाए। दर्जी ने बहुत दिनों तक अपना बिल नहीं भेजा। वे एक दिन उसकी दूकान पर गए। पैसा उस वक्त भी न देना था, लेकिन दर्जी को बनाए रखने के लिए बोले—क्यों जी, तुमने अभी तक अपना बिल नहीं भेजा ?

दर्जी—साहब, मैं किसी भले आदमी से तकाजा नहीं करता।

"और जब वह पैसा नहीं देता है, तब क्या करते हो?"

"तब मैं समझ लेता हूँ कि वह भला आदमी नहीं है और उससे अपने पैसे माँग लेता हूँ।"

३५

एक सुन्दरी स्त्री को एक कुरूप पति मिला था। बात करते-करते एक दिन पति बोला—मेरा भाई, जो मुझसे तीन साल बड़ा है, सब बातों में मुझसे विपरीत है। पर उसका विवाह अभी तक नहीं हुआ है। तुम उसे जानती हो?

स्त्री—जानती तो नहीं, पर अब जानना चाहती हूँ।

३६

एक मनुष्य किसी दिन एक महिला मित्र को लेकर नाटक देखने गया। उसे विश्वास था कि इससे उसकी स्त्री को ईर्षा न होगी। इसी से जब वह घर आया, तो उसने इसकी चर्चा अपनी स्त्री से भी की। इस समय श्रीमती जी बड़ी नाराज हो गईं। पति ने कहा—तुम जब मेरे मित्रों के साथ चली जाती हो, तब तो मैं कुछ भी नहीं कहता। फिर तुम्हारे जाने और मेरे जाने में फर्क क्या है?

स्त्री वाली—फर्क बड़ा भारी है। जब तुम दूसरी स्त्री को साथ ले जाते हो, तो उसका खर्च अपने पॉकेट से देना पड़ता है और मैं जब पर पुरुष के साथ जाती हूँ, तो अपना पैसा बचा कर आती हूँ।

३७

पति—प्रिये, किसी जरूरी काम से म जरा बाहर जा रहा हूँ। अगर आज शाम को न आ सका, तो तुम्हारे पास एक चिट्ठी लिख कर भिजवा दूँगा।

पत्नी—उसकी कोई जरूरत नहीं है। उस कागज को मैंने पहले ही तुम्हारे पॉकेट से निकाल लिया है।

३८

एक दिन एक नौजवान नाच-घर में एक नर्तकी पर मुग्ध हो गया। उसने अन्त में यही उचित समझा कि उस नायिका को भी वह अपना इरादा बतला दे, इसलिए बोला—तुम्हारे लिए म मौत का भी सामना करने को तैयार हूँ।

नर्तकी—वास्तव में तुमको इसके लिए तैयार रहना पड़ेगा। कहीं मेरा पति तुमको मेरे पास देख न ले।

३९

पहला—जिसने मेरी स्त्री से विवाह किया है, आज उसे म मार डालूँगा?

दूसरा—यह तो खून होगा।

पहला—नहीं, वह आत्म हत्या होगी।

४०

बच्चा—क्या हम यह कल्पना कर सकते है कि हमारे साथ खाना खाने एक दूसरा बालक भी बैठा है?

माँ—हाँ, कर सकते हो।

बच्चा—तब फिर उसके लिए भी एक थाली में भोजन मँगाओ।

४१

लुइस—विवाह होने के पहले तुम मुझे जितना प्यार करते थे, उतना प्यार क्या अब भी करते हो?

जॉर्ज—यह तो तब और अब के खर्च को मिलाने से मालूम होगा।

४२

चन्द्रिका—मुझ सी बड़भागिनी आज कोई न होगी। मेरा विवाह उसी से हो रहा है, जिसे मैं चाहती थी।

मोहिनी—बड़भागिनी तो वह है, जिसका विवाह ऐसे पुरुष से हो, जिसे सब चाहें।

४३

जेम्स—(अपनी प्रेमसी से) प्रतिदिन प्रात काल में केवल तुम्हारा ही ध्यान करता हूँ, प्रिय।

मरियम—स्टीफन भी यही कहता है।

जेम्स—पर मैं प्रतिदिन उससे दो घण्टे पहले ही उठ जाता हूँ।

४४

एक बार राह में ही बॉम्बे-मेल खड़ी हो गई। किसी ने जञ्जीर खींच दी थी। गार्ड पता लगाने आया, तो पहले दर्जे के एक डिब्बे की जञ्जीर ढीली हो रही थी, और एक नौजवान झाँक रहा था। गार्ड ने पूछा—क्या मामला है?

नौजवान बोला—कुछ नहीं, ताश खेलने के लिए तीन ही आदमी थे। चौथे की जरूरत थी। आप से हो सकेगा?

४५

मित्र—क्यों! विवाहित जीवन कैसा होता है? जब तुम अविवाहित थे, तब तो बड़े दुखी थे।

नव विवाहित पुरुष—भाई, बहुत अच्छा होता है। पहले तो घर-बाहर—सभी जगह दुखी था, परन्तु अब तो घर से निकलते ही सुखी मालूम होता हूँ।

४६

मालकिन—तुम जेल से बाहर रहने की कोशिश क्यों नहीं करते?

नौकर—की तो मालकिन, और इसी कोशिश में भागते

यक्त जेलर से भिड़ गया, जिसके लिए तीन महीने की सजा और मिली।

४७

शिक्षक—विष्णु, तुम यह बताओ कि लोग व्हेल मछली के मांस को खाते हैं या नहीं ?

विष्णु—खाते हैं।

शिक्षक—और उसकी हड्डी को क्या करते हैं ?

विष्णु—थाली के किनारे छोड़ देते हैं।

४८

"प्यारे, जरा उठो-उठो। मुझे मालूम होता है कि घर में चूहा है।"

"तो तुम इस बात की कल्पना कर लो कि घर में एक बिल्ली भी है, फिर तो तुमको नींद आ जायगी।"

४९

पुलिस-ऑफिसर—तो तुम अफ्रिका में पैदा हुए थे ?

अभियुक्त—जी हाँ।

पुलिस ऑफिसर—कौन सा हिस्सा ?

अभियुक्त—क्यों, मेरा सारा हिस्सा वहीं पैदा हुआ था।

५०

"आज का उनका भाषण बड़ी जाग्रति पैदा करने वाला था, क्यों ?"

"जी हाँ। जब तक भाषण होता रहा, कोई भी न सो सका।"

५१

बीमार की हालत देख कर डॉक्टर ने उसकी स्त्री से पूछा—क्यों, यह वही खाना खाते हैं, जो मैंने उनसे कहा था?

स्त्री बोली—जी नहीं, थोड़े दिनों और जीने के लिए इस तरह भूखे रह कर प्राण देना नहीं चाहते।

५२

दो महिलाएँ एक नाट्यशाला से निकलीं। एक ने पूछा—क्यों बहिन, तुम्हें कौन-सा पात्र पसन्द आया?

दूसरी—वही, जो मोटा-सा था, लाल साफा बाँधे था और जिसकी नाक चपटी थी।

पहली—पर न तो वह ठीक तरह से नाट्य कर सकता था, न गा सकता था और न उसका पार्ट ही अच्छा था।

दूसरी—इससे क्या हुआ? उसने मुझे तो एक फ्री पास दे दिया था और कल भी बुलाया है।

५३

रात को खाँ साहब को मालूम हुआ कि मुर्गीखाने में चोर है। तमञ्चा भर कर अपने कमरे की खिड़की से झाँक कर बोले—कौन है? कोई उत्तर न मिला, फिर

ललकारा। फिर भी कुछ उत्तर न मिला। तीसरी बार बोले—अगर कोई है तो बोल दे, नहीं तो गोली मार दूँगा। तब आवाज आई "मैं ही हूँ।" मियाँ साहब खिड़की बन्द करके बिस्तर में घुस गए।

५४

"आशा है कि कल सबेरे मेरे साथ भोजन करने में आपको कोई आपत्ति न होगी।"

"जी नहीं।"

"तो फिर कल दस बजे आपके यहाँ मैं पहुँच जाऊँगा।"

५५

प्रतिवादी के वकील ने वादी से, जो एक स्त्री थी, पूछा—तो क्यों श्रीमती जी, क्या आप यह सिद्ध कर सकती हैं कि उस घटना में आपका जो अँगूठा कट गया, उसका मूल्य हजार रुपया था?

वादी ने कहा—उससे भी अधिक। उसी अँगूठे से मैं अपने पति को दबाए रखती थी।

५६

एक मुर्गी वाले की बेटी का व्याह हुआ। मुर्गीखाना घर के पिछवाड़े था। उसने घर में कह दिया कि बेटी की बिदा पिछले दरवाज़े से करना।

स्त्री ने पूछा—क्यों ?

वह बोला—जब लोग इन पर चावल डालेंगे तो वह मुर्गीखाने के सामने ही गिरेंगे और मुर्गियाँ चावल मजे से खाती हैं।

५७

पिता—क्यों, आप मेरी बेटी से ब्याह करना चाहते हैं ?

विवाहेच्छु—(डर से) जी नहीं। यह आपसे किसने कहा ?

पिता—क्यों, उस लड़की में कौन सी बुराई है ?

५८

दो मित्र एक साथ बैठ कर किसी होटल में खाना खा रहे थे। एक ने हँसी करने के लिए अपने मित्र से कहा—तुम मेरी माँ बन जाओ और परसते जाओ। यह सुन कर लोगों में खूब कहकहा उड़ा।

खाना खाने के बाद दूसरे ने कहा—तुम मेरे बाप बन जाओ और मेरे खाने का दाम पटा दो।

५९

एक मालिक का नौकर छिपे छिपे रोज शराब पिया करता था। एक दिन मालिक ने नौकर की जगह पर शराब का एक बड़ा सा पीपा देख लिया। पहले तो वह



खूब नाराज हुए, पर जब नौकर ने कहा कि स्वास्थ्य लाभ करने के लिए मुझे डॉक्टर ने इसके प्रयोग की राय दी है, तब कुछ ठण्डे हुए। उन्होंने पूछा—इससे तुमको कुछ फायदा भी हुआ है ?

नौकर बोला—जी हाँ, परसों जब यह लाया गया था, तब तो इसे मुश्किल से तीन आदमी उठा सकते थे, पर आज मैं ही अकेला इसे लुढका देता हूँ।

६०

नन्हीं—क्यों, मछली बहुत जल्दी बढ़ा करती है ?

लाली—जी हाँ, चाचा जी ने कल एक मछली पकडी। जब-जब वे उसका जिक्र करते हैं, तब-तब वह बढ़ती ही जाती है।

६१

एक अफीमची अपनी बीबी की लाश को फूँक कर आ रहा था। रास्ते में किसी ने भूल कर कोठे से उसके सिर पर एक कागज छोड दिया। उसने उस कागज को देख कर कहा—तुमने वहाँ पहुँचने का कुशल-समाचार तो भेज दिया। पर जाते ही तुम देव भाषा सीख गई। मैं तो तुम्हारी चिट्ठी पढ़ ही नहीं सकता।

६२

एक फजूल आदमी किसी होटल से अपना डेरा उखड़ा

८१

"मेहरबानी करके आज के खेल का प्रोग्राम तो दे दीजिए।"

"पर खेल तो करीब-करीब ख़तम हो गया।"

"कोई परवाह नहीं, बीबी को घर में तो कुछ दिखाना ही पड़ेगा कि मैं सारी रात कहाँ रहा।"

८२

दारोगा—(सड़क पर काम करते हुए एक मज़दूर से) सिर में टोपी लगा कर काम करो कल्लू, नहीं तो सूरज की तेज़ी से तुम्हारा दिमाग ख़राब हो जावेगा।

कल्लू—जी धन्यवाद ! मगर मेरे जो दिमाग ही होता तो यहाँ यह काम करने क्यों आता !

८३

लड़ाई में अपना तजुर्बा बतलाते हुए बुड्ढा बोला—तब फिर डॉक्टरों ने मुझे तोपखाने में रख दिया और

एक श्रोता—शायद आप भूलते हैं। तोपखाना न होगा, शफ़ाखाना होगा।

बुड्ढा सिपाही—जी नहीं, तोपखाना था। मैं गोलियों से इस तरह से भरा हुआ था कि उन्होंने मुझे तोपखाना में ही ले जाना अच्छा समझा।

८४

विमला—क्यों, तुम्हारे घर वाले को बिल्ली से नफरत है क्या ?

सरला—हाँ, वे कहते हैं कि मैं अड़ोस-पड़ोस की सारी बिल्लियों को जिमाती हूँ। आई हो तो कुछ खा पीकर जाओ न ?

८५

एक सज्जन वकीलों की जोरों से बहुत कुछ बुराई कर रहे थे। बोले—सच कहता हूँ, मुझे एक वकील बता दो, मैं भट एक कायर बता दूँगा।

इतना सुन कर एक तगड़ा सा आदमी सामने ही आ धमका और बोला—मैं वकील हूँ, बतला कौन कायर है ?

वक्ता महोदय ने बड़ी नम्रता से जवाब दिया—मैं !

८६

"बस जनाब, माँ के सख्त बीमार होने की खबर पाते ही मैंने जामगाँव से साइकिल में हवा भरी और चढ़ कर रायपुर के लिए रवाना हो गया। मन में यही सोचता जा रहा था कि डॉक्टर यही कह देता कि जामगाँव की हवा इनके लिए बहुत फायदेमन्द होगी।"

"तब तो आप उन्हें रायपुर से ले गए होंगे ?"

"जी नहीं, हालत बहुत खराब होने से ऐसा न कर

सका। पर साइकिल को भीतर घसीटा और दोनों पहिए की हवा कमरे में ही खोल दी। मेरी माँ अब भगवान् की दया से अच्छी है।"

८७

एक गिरहकट किसी का पॉकेट काट कर उसमें का मनी-बेग उड़ा ले गया था। वह बेचारा अपने दुर्भाग्य की कथा कह रहा था। इतने में उसका एक मित्र बोल उठा—मेरे साथ यह बात कभी न होने पाती।

पहला—जी हाँ, मौका आता तो देखते।

दूसरा—यहाँ तो ऐसा मौका आने के पहले ही मेरी स्त्री का हाथ उसमें पड़ जाता जनाब!

८८

एक रेलवे-कर्मचारी के कान घटनावश बहरे हो गए। पर रेल के डायरेक्टर लोग उसे नौकरी से अलग नहीं करना चाहते थे। यही राय हो रही थी कि उसे दूसरी नौकरी दी जावे या पेन्शन दे दी जावे?

एक जवान डायरेक्टर बोल उठा—उसे शिकायत विभाग (कम्प्लेण्ट डिपार्टमेण्ट) में रख दीजिए।

८९

"अपनी स्त्री को मोटर चलाना सिखाने के लिए सब से पहले मुझे क्या करना चाहिए?"

"अपनी मोटर का बीमा करा लीजिए।"

९०

"जब तक पञ्च ने उस महिला को निरपराध करार न दिया, तब तक वह उनकी ओर मुस्कराती ही रही।"

"फिर ?"

"उसने हँस दिया।"

९१

डॉक्टर—बेचारे की आँख इतनी खराब हो गई थी कि वह जो कुछ देखता, वह सब उसे डबल ही दीखता।

"तब तो बेचारे को कोई नौकरी न मिली होगी ?"

डॉक्टर—बड़ी सरलता से मिल गई। बिजली-कम्पनी ने उसे मीटर पढ़ने को फौरन रख लिया।

९२

"अगर जिन्दगी का सब से ज्यादा मजा उड़ाना है तो या तो किसी बड़ी उलझन में पड़ जावे या किसी स्त्री के प्रेम में ही फँस जावे।"

"दूसरी बात ही क्यों न करे, जिसमें पहली बात आप ही उपस्थित हो जाय।"

९३

मेबेल—कल रात क्लेरेन्स और क्लॉड दोनों ने मुझसे विवाह करने का प्रस्ताव किया।

मरियल—और तुमने दोनों को इन्कार कर दिया ?

मैबेल—यह तुमने कैसे जाना ?

मरियल—तुम्हारे यहाँ से निकल कर उन दोनों को मैंने आपस में हाथ मिलाते देखा था।

९४

एक बार वह एक नाटक में गुरु वशिष्ठ का पार्ट कर रहा था। हँसी करने के लिए वह उसी भेष में अपने एक क्लब के भीतर जाने लगा। दरबान ने उसे न पहचान कर ललकारा—कौन है ?

उसने कहा—गुरु वशिष्ठ।

दरबान ने मेम्बरों का रजिस्टर उठा कर देखा। कहीं वह नाम दिखलाई न पड़ा। बोला—अब आप मेम्बर नहीं रहे।

९५

"जब-जब आपका व्याख्यान होता है, तब-तब मैं जरूर सुनने आता हूँ।"

"क्यों, मेरे ही व्याख्यान में क्यों आते हो ?"

"क्योंकि आपके व्याख्यान के दिन बैठने के लिए खूब जगह मिलती है।"

९६

उपदेशक—तुम लोगों को मालूम हो कि एक बार के

चुम्बन से चालीस हजार प्राण घातक कीड़े एक से दूसरे के मुँह में आते हैं।

नई जोड़ी—जी, पर हम इसके लिए चालीस लाख बार मरने को तैयार हैं।

९७

कुछ लोगों ने मिल कर फोटो लेने की ठानी और फोटोग्राफर से भी साथ में बैठने का अनुरोध किया। फोटोग्राफर ने सब ठीक कर एक लड़के को उसका बटन दबाना सिखा दिया और वह जाकर लोगों में बैठ गया। सब ठीक हो जाने के बाद फोटोग्राफर ने उस लड़के से पूछा—क्यों जी! तुमने बटन ठीक वैसे ही दबाया, जैसा कि मैंने सिखाया था?

लड़का बोला—जी हाँ, फोटो लेने के पहले मैंने आधे दर्जन बार कोशिश करके देख लिया था।

९८

लन्दन में एक युवक अमेरिका के अपने एक मित्र को वहाँ की कुछ इमारत वगैरह दिखला रहा था। एक सुन्दर-सी इमारत दिखला कर उसने पूछा—कहो, यह कैसी है?

अमेरिकन ने कहा—कुछ खराब नहीं है। पर यहाँ तो एक ही है। अमेरिका में आपको मैं ऐसे सैकड़ों दिखा सकता हूँ।

इङ्गलिशमैन ने कहा—ख़ैर इसकी कोई बात नहीं। यह तो एक पागलखाना है।

९९

एक विवाहिता स्त्री—मेरे पति सदैव भाग्यशाली ही रहे हैं। बचपन में घोड़े की पीठ पर से गिर पड़े, पर बाल बाँका न हुआ। बढ़ने पर उनके घर में आग लगी, पर वे जीवित ही रहे और . . . . !

एक अविवाहित पुरुष—और आज बीस वर्ष हुए तुमसे विवाह किया, पर अब तक जीवित ही रहे !

१००

एक रईस को थोड़ी-थोड़ी देर बाद अपनी तबीयत ख़राब मालूम होती थी और जहाँ भी होते, अपने डॉक्टर को बुलवा भेजते। एक दिन बाजार में डॉक्टर से भेंट होते ही वह बोले—डॉक्टर साहब, इस समय मुझे बड़ी सुस्ती लग रही है। सर चक्कर खा रहा है और घर जाते नहीं बनता, कहिए इसके लिए कौन दवा लूँ ?

डॉक्टर बोला—एक मोटर किराए पर कर लीजिए।

१०१

डॉक्टर साहब की दूकान पर मरीज़ों की ख़ूब भीड़ लगी हुई थी। उन्होंने दूकान खोलते हुए कहा—तुम लोगों में सबसे ज्यादा देर तक कौन रुका हुआ है ?

एक दर्ज़ी अपने बिल को आगे बढ़ाते हुए बोला—मैं ! जो कपड़े आप इस समय पहने हुए हैं, उन्हें मैंने ढाई वर्ष पहले बना कर दिया था, उसी का यह बिल है।

१०२

एक बार काउन्सिल में बहस करते-करते एक सदस्य आपे से बाहर हो गए और बोले—इस काउन्सिल के आधे सदस्य मूर्ख हैं। इस पर सदस्यों ने बड़ी आपत्ति की। उनसे माफ़ी माँगने के लिए कहा गया।

उस सदस्य ने कहा—अच्छा, मैं अपनी बात वापस लेता हूँ और अब यह कहता हूँ कि इस काउन्सिल के आधे सदस्य बेवकूफ़ नहीं हैं।

१०३

"प्रोफ़ेसर साहब, अगर मैं आपको 'गधा' कह दूँ, तो इसमें अपमान हो जायगा ?"

प्रोफेसर—अवश्य !

"और अगर एक गधे को 'प्रोफेसर' कहूँ तो ?"

प्रोफेसर—तब न होगा।

"ठीक है, प्रोफेसर साहब !"

१०४

"अगर आपने अपनी मोटर के चोर को पहचान ही लिया है, तो फिर उसे गिरफ़ार क्यों नहीं करा देते ?"

"क्योंकि अगर वह उसे एकाध दिन चलाएगा तो उसे उस पर नए टायर चढ़ाने ही पड़ेंगे। इसी से मैं थोड़े दिन ठहरा हुआ हूँ।"

१०५

खाँ साहब—कहते हैं, योगी अरविन्द की जोड़ का कोई भी व्यक्ति नहीं है।

मिस्टर एक्स—यह सुन कर आज मेरा जी हलका हुआ।

खाँ साहब—क्यों?

मिस्टर एक्स—क्योंकि एक से अधिक अरविन्द हो जाते।

१०६

"प्रिये, मैं तुम्हारे लिए नरक में भी जा सकता हूँ।"

"यह कैसे मालूम हो?"

"मेरी स्त्री होकर देख लो!"

१०७

मास्टर—संयोग का कोई अच्छा उदाहरण बताओ।

एक लड़का—मेरी माँ और बाप का विवाह एक ही दिन हुआ था।

१०८

"मेरी स्त्री ने कल रात को मेरा पॉकेट टटोल डाला।"

"उसे क्या मिला ?"

"वही, जो दूसरे खोजियों को मिलता है—लेक्चर के लिए खासा मसाला ।"

१०९

घोर वर्षा होने के कारण एक यात्री को एक सराय में घुस जाना पड़ा। वह दरवाजे पर बैठे हुए चौकीदार से बोला—यह तो प्रलय-सी मालूम हो रही है।

चौकीदार—कौन प्रलय ?

यात्री—नहीं जानते ? वही, जिसमें केवल विष्णु भगवान् बालमुकुन्द के रूप में वट के एक पत्ते पर रह गए थे और जिन्हें देख कर मारकण्डेय मुनि विस्मित हो गए थे।

चौकीदार—मुझे तो इसकी कुछ भी खबर नहीं। तीन-चार दिनों से इधर कोई अखबार भी नहीं आता।

११०

एक आशावादी नायिका—(अपने प्रेमी से) सौन्दर्य के इतने उपासक होते हुए भी आपने अब तक विवाह क्यों नहीं किया ?

निराशावादी प्रेमी—अगर आदमी फूल को प्यार करता है, तो उसके लिए माली होना जरूरी नहीं है।

१११

पति—प्रिये, तुमको इस वेश में देख कर मुझे बेहद खुशी होती है। पर इसमें बहुत खर्च है।

"क्योंकि अगर वह उसे एकाध दिन चलाएगा तो उसे उस पर नए टायर चढ़ाने ही पड़ेंगे। इसी से मैं थोड़े दिन ठहरा हुआ हूँ।"

१०५

खाँ साहब—कहते हैं, योगी अरविन्द की जोड़ का कोई भी व्यक्ति नहीं है।

मिस्टर एक्स—यह सुन कर आज मेरा जी हलका हुआ।

खाँ साहब—क्यों ?

मिस्टर एक्स—क्योंकि एक से अधिक अरविन्द हो जाते।

१०६

"प्रिये, मैं तुम्हारे लिए नरक में भी जा सकता हूँ।"

"यह कैसे मालूम हो ?"

"मेरी स्त्री होकर देख लो !"

१०७

मास्टर—संयोग का कोई अच्छा उदाहरण बताओ।

एक लड़का—मेरी माँ और बाप का विवाह एक ही दिन हुआ था।

१०८

"मेरी स्त्री ने कल रात को मेरा पॉकेट टटोल डाला।"

"उसे क्या मिला ?"

"वही, जो दूसरे खोजियों को मिलता है—लेक्चर के लिए खासा मसाला।"

१०९

घोर वर्षा होने के कारण एक यात्री को एक सराय में घुस जाना पड़ा। वह दरवाजे पर बैठे हुए चौकीदार से बोला—यह तो प्रलय-सी मालूम हो रही है।

चौकीदार—कौन प्रलय ?

यात्री—नहीं जानते ? वही, जिसमें केवल विष्णु भगवान् बालमुकुन्द के रूप में बड के एक पत्ते पर रह गए थे और जिन्हें देख कर मारकण्डेय मुनि विस्मित हो गए थे।

चौकीदार—मुझे तो इसकी कुछ भी खबर नहीं। तीन-चार दिनों से इधर कोई अखबार भी नहीं आता।

११०

एक आशावादी नायिका—(अपने प्रेमी से) सौन्दर्य के इतने उपासक होते हुए भी आपने अब तक विवाह क्यों नहीं किया ?

निराशावादी प्रेमी—अगर आदमी फूल को प्यार करता है, तो उसके लिए माली होना जरूरी नहीं है।

१११

पति—प्रिये, तुमको इस वेश में देख कर मुझे बेहद खुशी होती है। पर इसमें बहुत खर्च है।

पत्नी—पैसे की क्या चिन्ता, स्वामी ! मुझे तो तुम्हें खुश करने की चिन्ता रहती है।

११२

"सरोजिनी के पास शायद एक नया 'बेबी' आया है।"

"लड़की या लड़का ?"

"बेबी मोटरकार।"

११३

(टेलीफ़ोन से) "हेलो ! हेलो !! जरा डॉक्टर साहब को जल्दी भेजो। मेरा बच्चा एक सुई निगल गया है।"

नौकरानी—(टेलीफ़ोन से) डॉक्टर साहब काम में लगे हुए हैं। सुई की क्या अभी ही जरूरत है ?

११४

अभ्यागत—(एक छ वर्ष के बच्चे से) क्यों बच्चे, मुझे पहुँचाने स्टेशन तक न चलोगे ?

बच्चा—जी नहीं ; क्योंकि आपके जाते ही हम सब खाना खाने बैठेंगे।

११५

"आपके सिर की यह सूजन आपके सङ्गीत-प्रेम की सूचिका है।"

"जी हाँ, यह सङ्गीत की ही सूजन है। सिर पर तबला गिर जाने से यह हो गई थी।"

११६

बच्चा—क्यों दीदी, तुमने यह कहा था न कि तुम्हारी जो चवन्नी खो गई है, अगर वह मुझे मिले तो उसे मैं रख लूँ।

दीदी—हाँ!

बच्चा—तब तो तुम मुझे ग्यारह पाई और दो। वह चवन्नी नहीं—एक पाई ही थी।

११७

"विवाह होने के पहले तो तुम कहा करती थीं कि दुनिया में तुम्हारे बराबर कोई है ही नहीं।"

"जी हाँ, और अब तो ऐसा कहते मुझे ईर्षा होगी।"

११८

राहगीर—(एक नौकर से) क्यों जी, फुलर साहब का मकान यही है?

नौकर—यह तो नहीं है, पर इसी सड़क पर है।

"उस मकान का नम्बर जानते हो?"

नौकर—जी हाँ, उनके मकान के सामने ही लिखा है।

११९

एक बच्चा रोता हुआ स्कूल से आया। माँ ने पूछा—क्या फिर किसी से लड़ बैठे? मैंने कहा था न कि जब तुमसे कोई छेड़-छाड़ करे तब सबसे पहले मन में ही

१, २, ३ करके १०० तक गिन लेना, फिर तुम्हारी जीत अवश्य हो जावेगी।

बच्चा—मैंने तो ऐसा ही किया। पर रामा की माँ ने उसे पचास तक ही गिनना सिखाया था!

१२०

मेजिस्ट्रेट—तुमने यह कबूल कर ही लिया है कि, तुमने पुलिसमैन पर उसी तरह से हमला किया था, जैसा कि बयान किया गया है।

अपराधी—जी हाँ!

मैजिस्ट्रेट—तो अब क्या करना चाहते हो?

अपराधी—उससे इन्कार करना चाहता हूँ।

१२१

स्त्री—शायद चोरों की आवाज आ रही है। जगते तो हो?

पति—नहीं।

१२२

"उफ! आज मुझे सब से ज्यादा उधार देने वाले से मेरा नाता टूट गया।"

"क्यों, क्या वह मर गया?"

"नहीं, लाचार होकर कल मैंने उसका सारा कर्ज अदा कर दिया।"

हरी—भूमध्य-रेखा एक काल्पनिक रेखा है, जो एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक खींच दी गई है और जिस पर पृथ्वी घूमती है।

मास्टर साहब—क्या उस रेखा पर साइकिल चला सकते हैं?

हरी—जी हाँ।

मास्टर साहब—कैसी साइकिल?

हरी—एक काल्पनिक साइकिल।

१३०

बच्चा—(माँ से, जिसे उसी समय तलाक़ दिया गया था) क्यों माँ, अब हमारे बाप कौन होंगे?

१३१

एक रईस एक होटल में ठहरे हुए थे। रात को सोते वक्त अपने जूतों को उन्होंने कमरे के बाहर रख दिया। उन्होंने सोचा था कि उन्हें मैले देख कर होटल का नौकर पॉलिश कर देगा। पर सवेरे उठ कर जब उन्हें वैसे ही पाया, तब नौकर को बुला कर फटकारा—क्यों जी, मैंने जूतों को किस वास्ते कमरे के बाहर रख दिया था?

नौकर ने नरमी से जवाब दिया—कुछ कह नहीं सकता हुजूर! बेअदबी माफ करें, मैंने तो यही समझा

स्टेशन पर खड़ी हुई। एक मुसाफिर दौड़ा हुआ गार्ड के पास गया और बोला—यहाँ चाय पीने का काफी वक्त है?

गार्ड ने कहा—हाँ-हाँ, क्यों नहीं!

मुसाफिर—पर मुझे यह कैसे यकीन हो कि मेरे लौटे बिना गाड़ी न जायगी?

गार्ड—एक ही तरीका है, मैं भी आपके साथ चला चलता हूँ।

१२७

"शायद आपके स्वामी की नौकरी छूट गई है?"

"नहीं, अब वे मेरे नहीं रहे।"

"क्यों?"

"क्योंकि अब उनकी नौकरी नहीं रही।"

१२८

दाँत के डॉक्टर की स्त्री—यह हमारी पुरानी नौकरानी है। उसके जन्म-दिन के उपलक्ष में हमें उसे कुछ पुरस्कार अवश्य देना चाहिए।

डॉक्टर—जरूर, मैं उसके दो दाँत तक मुफ्त में ही उखाड़ दूँगा।

१२९

मास्टर साहब—हरी, भूमध्य-रेखा किसे कहते हैं?

हरी—भूमध्य-रेखा एक काल्पनिक रेखा है, जो एक ध्रुव से दूसरे ध्रुव तक खींच दी गई है और जिस पर पृथ्वी घूमती है।

मास्टर साहब—क्या उस रेखा पर साइकिल चला सकते हैं?

हरी—जी हाँ।

मास्टर साहब—कैसी साइकिल?

हरी—एक काल्पनिक साइकिल।

१३०

बच्चा—(माँ से, जिसे उसी समय तलाक़ दिया गया था) क्यों माँ, अब हमारे बाप कौन होंगे?

१३१

एक रईस एक होटल में ठहरे हुए थे। रात को सोते वक्त अपने जूतों को उन्होंने कमरे के बाहर रख दिया। उन्होंने सोचा था कि उन्हें मैले देख कर होटल का नौकर पॉलिश कर देगा। पर सवेरे उठ कर जब उन्हें वैसे ही पाया, तब नौकर को बुला कर फटकारा—क्यों जी, मैंने जूतों को किस वास्ते कमरे के बाहर रख दिया था?

नौकर ने नरमी से जवाब दिया—कुछ कह नहीं सकता हुजूर। बेअदबी माफ करगें, मैंने तो यही समझा

था कि आप नशे में मस्त थे, इसीलिए अपना जूता बाहर छोड़ गए होंगे।

१३२

मरीज़—डॉक्टर साहब, कह नहीं सकता कि मुझे क्या हो गया है, पर अब मुझे यह आशा नहीं रही कि मैं अधिक दिन जी सकूँगा।

डॉक्टर—क्यों, तुम्हारी बीमारी ठीक उसी तरह की है, जैसे कि कुछ दिनों पहले मुझे थी, पर अब मुझे देखो।

मरीज—हाँ, यह तो ठीक है, पर आपके लिए कोई अच्छा-सा डॉक्टर मिल गया होगा। क्यों?

१३३

"क्यों, अब तक तुम्हारी शादी नहीं हुई है?"

"नहीं!"

"कुछ तय-वय हुआ?"

"नहीं।"

"तब क्या मामला है?"

"मेरे बाप तो कहते हैं कि मेरी स्त्री खूबसूरत और धनवान् हो। माँ कहती हैं कि वह खूब काम करने वाली हो और मेरी राय है, वह तन्दुरुस्त और पढ़ी-लिखी हो। हम सब ऐसी ही लड़की की तलाश में हैं।"

१३४

बूढ़ा पति—मुझे उसकी बड़ी फिक्र लग रही है कि ऐसी भारी बारिश में वह बाहर ही घूम रही है।

नौजवान मित्र—घबराओ नहीं मियाँ, किसी न किसी मकान में अवश्य ठहर गई होगी।

बूढ़ा पति—बस इसी की तो फिक्र है॥

१३५

निम्न-लिखित बातें जल्दी समझ में नहीं आतीं —

(१) पुरुष के कपड़ों में लम्बे बाल, (२) इनकम-टेक्स का तरीका, (३) अमेरिका की भाषा, (४) छत्तीसगढ़ के रीति-रिवाज, (५) मौसम, (६) बेटे से स्पर्द्धा, (७) लोग पैदा क्यों होते हैं ? (८) लोग विवाह क्यों कर लेते हैं ? (९) लोग विवाह क्यों नहीं करते ? (१०) स्त्रियों की उम्र, (११) स्त्रियों की 'नहीं', (१२) नाई की जबान, और (१३) पैसा कहाँ जाता है ?

१३६

एक भला आदमी प्रति दिन सन्ध्या को एक भठियारिन के पास दिल बहलाने के लिए बैठ जाया करता था। उस भले आदमी के मित्र ने एक दिन कहा—तुमको उससे इतनी मोहब्बत है, तो फिर उसी से विवाह क्यों नहीं कर लेते ?

भला आदमी बोला—तब फिर अपना शाम का वक्त कहाँ काटूंगा ?

१३७

मास्टर—अगर पानी को न उबालो तो तुमको क्या हो ?

एक लडका—तपेदिक का ज्वर।

मास्टर—और अगर उबाल लो तो तुमको क्या मिलेगा ?

दूसरा लडका—नहाने को गरम पानी !!

१३८

सजा पूरी हो जाने पर एक कैदी को जेलर ने उसे छोडते हुए बहुत सा उपदेश दिया और कहा—अब अपनी आदत सुधार कर रहना। परन्तु कैदी खडा ही रह गया।

जेलर ने कहा—अब किसके लिए खडे हो ?

कैदी ने धीरे से कहा—अपने औजारों के लिए।

१३९

"तो तुमने उसकी खातिर शराब पीना छोड दिया ?"

"हाँ।"

"और उसी की खातिर तम्बाकू पीना भी छोड दिया ? "

"हाँ।"

"नाच-रङ्ग, जुआ वगैरह भी !"

"हाँ।"

"तब फिर तुम उससे विवाह क्यों नहीं कर लेते ?"

"इतने सुधार हो जाने के बाद अब मैं उसकी जरूरत ही नहीं समझता !"

१४०

गुरु—क्यों जी, जागना क्रिया का भूतकाल क्या है ?

शिष्य—सोना ।

१४१

"अजी तुम उसकी सूरत तो देखते। बिल्ली भी उसे देख कर खिलखिला पड़ती है।"

"तब तो तुम्हें खूब हँसी आई होगी ?"

१४२

"जब मैं नाटक में भरती होने गई, तो मैनेजर साहब ने मेरी उम्र पूछी, पर मुझे कुछ याद नहीं रहा कि बीस है या इक्कीस।"

"तब तुमने क्या कहा ?"

"मैंने कोई दुविधा की बात कहना ठीक नहीं समझा। अपनी उम्र उन्नीस बता दी।"

१४३

दो वर्ष बाद एक नायक फिर अपनी नायिका स

किसी स्थान में मिला। नायिका को वह घटना याद आई, जिसके कारण उस नायक को दो वर्ष की सजा हुई थी। उसी को याद करते हुए जरा शर्म से नायिका ने पूछा—कहो, तुम्हें वह दिन याद है, जब कि तुमने मुझसे अपना इरादा प्रकट किया था और मैंने इन्कार कर दिया था?

नायक—अच्छी तरह से। वह शुभ दिन, जबकि मैं सर्वनाश होने से बचा, अच्छी तरह से याद है।

१४४

भोज समाप्त हो जाने के बाद महिलाओं की ओर से एक सज्जन को कुछ कहने को कहा गया। पर एकाएक उनसे कुछ कहते न बना। वह बहुत देर तक दीवार पर टँगे हुए चित्रों की ओर देख कर बोले—सज्जनो! मैं समझ नहीं सकता कि इन चित्रों की क्या जरूरत थी, जबकि हमारे सामने इतने सुन्दर-सुन्दर सजीव चित्र मौजूद हैं।

१४५

एक मसखरे ने एक सङ्गीतकार के पास लिख भेजा—एक नया गीत कृपया लिख भेजिए। अगर अच्छा हुआ तो एक चेक भेजूँगा।

सङ्गीतकार ने जवाब दिया—कृपया एक नया चेक भेज दीजिए। अगर चेक अच्छा हुआ, तो एक गीत लिख भेजूँगा।

१४६

"प्रिये, तुम कभी तो जनाने वेश में रहती हो और कभी मर्दाने ?"

"जी हाँ ! यह तो मेरी वंश-परम्परा की बात है।"

"क्यों ?"

"मेरे पुरखों में से आधे पुरुष थे और आधे स्त्री।"

१४७

मास्टर—दर्पण क्या है, जानते हो हरी ? मुँह को धो लेने के बाद फिर किस चीज को ढूँढते हो ?

हरी—मुँह धोने के बाद तौलिया ढूँढ़ते हैं, मास्टर साहब !

१४८

"और जब मैंने विदा माँगी, तो वह मुझसे चिपट गई और बच्चों की तरह सिसकने लगी। फिर मेरे गले में हाथ डाल कर "

"मैं उसकी सब आदतें जानता हूँ। एक बार मेरे साथ भी उसने वैसा ही किया था।"

१४९

पति—देखो प्रिये, पिछले महीने ही तुम्हारे कपड़े

बनाने वाले का एक ७४ रुपए का बिल पटाया है और इस महीने यह दूसरा ६० रुपए का बिल आगया।

पत्नी—क्यों प्यारे, क्या इससे यह मालूम नहीं होता कि मैंने अपना खर्च कम कर दिया है?

१५०

एक छोटा बच्चा—(एक बूढ़े से) महाशय जी, जरा मेरी बीडी तो सुलगा दीजिए।

बूढ़ा—बीडी?

छोटा बच्चा—जी हाँ, माँ कहती हैं कि तुम अपने हाथों से बीडी न सुलगाया करो।

१५१

बच्चा—क्यों दद्दा, राजा किसे कहते हैं?

दद्दा—बेटा, राजा उसे कहते हैं जो दण्ड दे सकता है और जिसकी बात लोग मानते हैं।

बच्चा—तो मेरी माँ भी राजा हैं!

१५२

"अजी, अब तो मेरी बेटी एक आदमी की तनख्वाह पाती है।"

"अच्छा! उसने विवाह कब कर लिया?"

१५३

मास्टर—'मनुष्य बिना देश के'—इससे खराब और क्या हो सकता है?

लड़का—देश बिना मनुष्य के!

१५४

"मेरे विचार में सब से उजड्ड छोकरे वे हैं, जोकि हरेक बात का जवाब, सवाल करके देते हैं।"

"आपका क्या यही विचार है?"

१५५

"जनाब, मेरी मोटरकार चौदह वर्ष की पुरानी जरूर है; पर आज तक न तो वह एक बार टूटी है, न कभी चलते हुए अटकी है और न उससे कोई दुर्घटना ही हुई है।"

"शायद आज तक आपने उसे एक बार भी न चलाया होगा?"

१५६

बुड्ढा ग्राहक—पके बाल के लिए आपके पास कुछ है?

दूकानदार—दिल में बड़ी भारी इज्जत।

१५७

मैजिस्ट्रेट—उसको जरा भी पता न लगा और तुमने उसके पॉकेट से कैसे वह नोट चुरा लिए?

अपराधी—यह सारी क्रिया सिखाने के लिए मैं पाँच रुपए फीस लेता हूँ।

१५८

शिक्षक—बालको, तुम लोग हमेशा याद रक्खो कि 'स्तान' किसी शब्द के साथ जोड़ देने से उसकी जगह का सूचक होता है। जैसे—अफगानिस्तान अफगानों की जगह, तुर्किस्तान तुर्कों की जगह। इसी तरह के तुम लोग कोई दूसरे उदाहरण बता सकते हो?

एक लड़का—देवस्तान देवों की जगह, घोड़स्तान घोड़ों की जगह, जूतस्तान जूते की जगह।

१५९

एक लड़के पर मुर्गी चुराने का बार-बार मुकदमा चलाते-चलाते एक मैजिस्ट्रेट साहब परेशान हो गए। जब वह फिर पकड़ा गया, तब उन्होंने उसके बाप से ही कहना ठीक समझा। बुड्ढे आदमी को बुलवा कर कहा—इसको मैं यहाँ बार-बार देख कर परेशान होगया। तुम इसको ठीक रास्ता क्यों नहीं बताते, ताकि यह फिर यहाँ न आए।

बुड्ढा बोला—हुजूर ठीक रास्ता तो मैंने उसे बार-

ग्रार बतलाया। पर क्या करूँ, उसके निकलते ही मुर्गियाँ ज़ोर से फड़फड़ा कर चिल्ला उठती हैं और वह पकड़ लिया जाता है।

१६०

मास्टर—मूर्त्ति के आँखें होती हैं, पर वह क्या नहीं कर सकती? बोलो मोहन?

मोहन—देख नहीं सकती।

मास्टर—उसके कान होते हैं, पर ?

सोहन—सुन नहीं सकती।

मास्टर—होंठ होते हैं, पर ?

मोहन—बोल नहीं सकती।

मास्टर—नाक होती है, पर ?

लल्लू—पोंछ नहीं सकती।

१६१

"किसी-किसी कुत्ते को उसके मालिक से भी ज्यादा बुद्धि होती है।"

"कभी नहीं।"

"याद जनाब, आप मेरे कुत्ते को नहीं जानते।"

१६२

"यह तो तुम्हारी प्रियतमा का चित्र है। इसे संसार का नखरा क्यों कहते हो?"

"क्योंकि वही मेरे लिए सारी दुनिया है।"

१६३

एक पण्डित जी अपने एक यजमान पर नाराज होकर बोले—तुम जानते हो, तुमको नरक मिलेगा। वहाँ तुमको देख कर मुझे बड़ी खुशी होगी।

१६४

एक नामी चित्रकार ने एक बार सिविल-सर्जन को जरूरी काम के नाम से बुलवा लिया। उसके आने पर बोला—डॉक्टर साहब, मेरा कुत्ता बीमार है। उसी के बारे में सलाह लेने के लिए मैंने आपको कष्ट दिया है।

सिविल सर्जन को बड़ा क्रोध आया, पर वे क्रोध करके क्या करते! 'विज़िट' की फीस तो उन्हें मिल ही गई थी। कुछ दिनों के बाद उन्होंने भी उस चित्रकार को एक जरूरी चिट्ठी भेज कर बुलवा लिया। चित्रकार जब पहुँचा तो बोले—एक आले को रँगवाना था, इसी से बुलवा लिया कि आपकी क्या राय है।

१६५

"माँ आपसे दस अण्डे उधार माँगती है, ताकि उन्हें मुर्गी हमारे घर में सेवे। आप उधार देंगी?"

"मैं नहीं जानती थी कि तुम्हारे यहाँ भी मुर्गी है।"

"जी नहीं, हमारे यहाँ मुर्गी नहीं है। आपके यहाँ

के अण्डों को सेने के लिए उन्होंने एक मुर्गी भी उधार ली है, ताकि बच्चे हमारे हो जायँ।"

१६६

"क्या कर रहे हो प्रियतम ?"

"चतुर स्त्री अपने प्रियतम से ऐसा सवाल कभी नहीं कर सकती।"

'पर एक चतुर पुरुष तो अपनी ....।"

"जी नहीं ! चतुर पुरुष के स्त्री होती ही नहीं।"

१६७

पति—जरा हाथ सँभाल कर खर्च किया करो। जरा भविष्य को तो सोचो। मैं मर जाऊँगा तो फिर तुम कहाँ रहोगी ?

पत्नी—मैं तो यहीं रहूँगी। सवाल तो यह है कि अगर ऐसा हो गया, तो तुम कहाँ रहोगे ?

१६८

किसान—कहिए डॉक्टर साहब, क्या हाल-चाल है ?

डॉक्टर—इन्फ्लूएन्ज़ा की फसल खराब हो रही है।

१६९

"प्यारे ! मैं तुम्हारे पैरों पड़ती हूँ। तुम मुझे कभी मत भूलना और जिस जिस देश में जाना, वहाँ-वहाँ से मुझे अवश्य पत्र लिखना।"

"प्रिये, सच कहना, तुम प्रेम से ऐसा कह रही हो, या भिन्न-भिन्न देश के टिकट इकट्ठा करने की इच्छा से।"

१७०

तरुणी—(लड़ कर और गुस्से में आकर) मैं अपनी माँ के घर चली जाऊँगी।

पति—(शान्ति से) अच्छा है, रेल-खर्च के लिए यह पैसे ले लो।

तरुणी—पर वापसी मुसाफिरी के लिए तो इतने पैसे काफी न होंगे।

१७१

पति—देखो, उधर नायक और नायिका दोनों कितने सुखी जान पड़ते हैं।

पत्नी—उनका विवाह कब हुआ ?

पति—अभी तक नहीं हुआ है।

१७२

मास्टर—(क्रोध से) मेरे बेंत लगाने के पहले तुम और कुछ कहना चाहते हो ? तुम्हें मारते हुए तुमसे ज़्यादा मुझे चोट लग रही है।

लड़का—आपने तो कोई अपराध नहीं किया है, इस-लिए आप अपने को इस तरह सजा न दीजिए।

१७३

लड़की—(जिसकी शादी होने वाली है) माँ, तुम मेरे लिए जरूर ही एक नया मखमली जैकेट बनवा देना।

माँ—(अपनी पुरानी जेकेट को देती हुई) यह जैकेट मेरे विवाह में काम आ सकी, तो क्या तुम्हारे काम न आएगी ?

१७४

गार्ड—श्रीमती जी, जल्दी चढ़ जाइए। गाड़ी छूटने ही वाली है।

श्रीमती जी—जरा अपनी छोटी बहिन को चूम लेने दीजिए।

गार्ड—आपका यह काम में किए देता हूँ, आप चढ़ जाइए।

१७५

एक बीज की दुकान से एक आदमी ने पन्द्रह बार मटर के नमूने मुफ़्त मँगाए। जब उसकी सोलहवीं चिट्ठी आई, तो दुकानदार ने परेशान होकर लिखा—क्या आप अपने सारे गाँव में सिर्फ मटर ही बोना चाहते हैं ?

उस आदमी ने जवाब भेजा—हम लोग उसे बोते-बोते नहीं, घर में उसकी तरकारी बनती है। कृपया नमूना मुफ़्त शीघ्र ही भेजिए।

१७६

एक डरपोक आदमी जब घर किराए पर लेता, तो हमेशा सबसे नीचे की ही कोठरी लेता। उसे यही फिक्र लगी रहती कि अगर घर में आग लगी, तो फौरन निकल भागूँगा। एक बार उसे चौथी मञ्जिल में कमरा मिला। उसके पिछवाड़े एक छोटी सी खिड़की थी, उसे देख कर वह बड़े सोच में पड़ा था। अन्त में उसके मुँह से यही आवाज निकली कि मौका आने पर यहाँ से कैसे निकल भागूँगा! घर के मालिक ने यह सुनते ही कहा—घबड़ाओ नहीं, वह मौका ही नहीं आ सकता। मैं किराया हमेशा पेशगी ही ले लेता हूँ।

१७७

एक कम्पनी का एजेण्ट बहुत ही चालाक था। वह अपने माल के नमूने लेकर एक रईस के पास 'ऑर्डर' लेने गया और बोला—बाबू साहब, निहायत ही उम्दा चीजें हैं, कुछ खरीदिएगा?

रईस—नहीं।

एजेण्ट—कम से कम नमूने तो देख लीजिए।

रईस—भाई, इस वक्त माफ करो।

एजेण्ट—खैर, आप न देखें। मुझे ही तो देख लेने दीजिए, मैंने स्वयं भी इन्हें नहीं देखा है।

१७८

"आज मैंने पाँच मच्छड़ मार डाले। दो नर थे और तीन मादा।"

"ये तुमने कैसे पहचाना?"

"दो तो एक कोने में भनभना रहे थे और तीन दर्पण के सामने चक्कर काट रहे थे।"

१७९

एक अमीर के लड़के को उसके गणित के अध्यापक ने एक सवाल गलत होने के कारण छुट्टी हो जाने पर भी रोकना चाहा, क्योंकि उसका एक सवाल गलत था।

लड़के ने पूछा—कितने का फर्क है?

अध्यापक—तीन रुपए का।

लड़का—तीन रुपए मैं आपको अपने पॉकेट से दे दूँगा, पर इस वक्त आप मुझे छोड़ दीजिए। इसी वक्त एक जरूरी काम से बाहर जाना है।

१८०

पुलिस—आप फी घण्टे साठ मील के हिसाब से मोटर चला रहे थे, इसलिए आपको अपना नाम और पता बताना होगा।

मोटर वाला—अभी तो मेरा एक घण्टा पूरा भी नहीं हो पाया है, आपको मोटर की रफ्तार का पता कैसे लगा?

१८१

छमाही परीक्षा में श्यामू को एक कठिन सवाल करने को कहा गया। सवाल यह था—यदि एक घोडा डेढ़ मिनिट में एक मील दौड़ सकता है और दूसरा घोडा उतनी ही दूरी दो मिनिट में तय करता है, तो यह बताओ कि अगर दोनों घोडे एक साथ अपनी-अपनी रफ़्तार से दो मील की दौड, दौडें तो पहला घोडा कितना आगे निकल जायगा?

जब सवाल करते न बना, तो श्यामू को एक उपाय सूझा। उसने जवाब में लिख दिया—मुझे बहुत अफसोस है कि घुडदौड से किसी प्रकार का सम्बन्ध रखना मेरे सिद्धान्त के विरुद्ध है। इसलिए यहाँ उसके बारे में कुछ भी मैं नहीं लिख सकता।

१८२

"महाशय जी, आशा है कि इस शुभ कार्य में आप भी कुछ सहायता देंगे।"

"जी हाँ, यह चेक ले जाइए।"

"पर आपने तो इसमें अपना नाम ही नहीं लिखा।"

"मैं यह नाम के लिए नहीं दे रहा हूँ। मैं गुप्त दान ही देना चाहता हूँ।"

१८३

शेखचिल्ली—मैंने बन्दूक के छूटते ही देखा कि एक भालू सामने मरा पडा है।

शिकारी—वह वहाँ इस तरह कितनी देर से पडा था ?

१८४

माँ—क्यों रे पाजी, अपने से छोटे को तूने क्यों मारा ?
लडका—उस वक्त कोई बडा मिला ही नहीं।

१८५

एक गरीब मजदूर लोगों के मकानों की बाहरी खिडकी और दरवाजों को साफ करके ही पैसा-दो पैसा कमा लेता था। एक कञ्जूस के मकान में बहुत से जाले लग रहे थे। मजदूर ने कहा—सरकार, आपके खिडकी-दरवाजों को साफ कर दूँ ?

कञ्जूस ने अपना चश्मा नाक पर चढाते हुए कहा—नहीं, अभी उन्हें साफ करने की जरूरत नहीं है।

मजदूर ने कहा—सरकार, आपके चश्मे को ही जरा साफ कर दूँ।

१८६

"जिन्दगी भर अब किसी भी औरत से ब्याह करने का इरादा न करूँगा।"

"क्यों, फिर भी हताश होना पडा क्या ?"

"नहीं, मेरा विवाह हो गया।"

१८७

मेजिस्ट्रेट—अब तुम नहीं बच सकते। तीन-तीन

आदमियों ने गवाही दी है कि उन्होंने तुमको चोरी करते देखा है।

अपराधी—तीन आदमी क्या, मैं हजारों आदमी ला सकता हूँ, जिन्होंने मुझे चोरी करते नहीं देखा है।

१८८

धनी मित्र—मित्र, मेरे दिल में तुम्हारे लिए बड़ी दया है।

गरीब मित्र—पर आपके पॉकेट में भी कुछ दया है या नहीं ?

१८९

मुवक्किल—(अपना वसीयतनामा लिखाते हुए) मैं अपनी स्त्री के लिए पाँच सौ रुपए छोड़े जाता हूँ।

वकील—पर अभी तो वह जवान है। शायद फिर विवाह कर ले।

मुवक्किल—अगर वह दूसरा विवाह करे, तो उसे हजार रुपए देना चाहता हूँ।

वकील—यह तो तुम दूना कर रहे हो। ऐसी हालतों में रकम बहुधा कम कर दी जाती है।

मुवक्किल—लेकिन उस अभागे को भी तो कुछ हर्जाना मिलना चाहिए, जो इससे विवाह करेगा।

१९०

पति—वह जिसे छूता है, वही सोना हो जाता है।

पत्नी—आपने मुझे जो जेवर बनवा दिए हैं, उसे भी वे छू देंगे ?

१९१

मित्र—कहिए डॉक्टर साहब, आपके अस्पताल की क्या हालत है ?

डॉक्टर—तीन बीमार तो मर गए, पर तरक्की करने की हर तरह से कोशिश करूँगा।

१९२

एक छोटा लड़का—मास्टर साहब, आज मैंने क्या पढ़ा है ?

मास्टर—क्या अजीब सवाल है ?

लड़का—लेकिन जब मैं घर जाऊँगा तो मुझसे तो लोग यही पूछेंगे।

१९३

वकील—अगर तुम्हें मेरी सच्ची सलाह चाहिए तो

मुवक्किल—नहीं-नहीं, मुझे आपकी वकालती सलाह चाहिए।

१९४

स्त्री—बहुत से पुरुष बेचारे ऐसे भी होते हैं कि

आँख रहते हुए भी नहीं देखते और कान रहते हुए भी नहीं सुनते।

पुरुष—पर शायद ही कोई स्त्री ऐसी होगी, जो जीभ रहते हुए न बोले।

१९५

"हमारे इङ्गलैण्ड में आजकल तलाक की प्रथा बहुत बढ़ रही है।"

"चलो अच्छा है। उसकी रफ़्तार अगर ऐसी ही रही, तो हम नवयुवकों को विवाह का डर न रहेगा।"

१९६

"कल मेरी स्त्री का जन्म-दिन है, इसलिए उसे मैं उपहार-स्वरूप कोई दुर्लभ वस्तु देना चाहता हूँ।"

"अपने बालों का एक गुच्छा दे दीजिए।"

१९७

सोहन—जब तक मैं पचीस वर्ष का न हो जाऊँगा, तब तक ब्याह न करूँगा।

मोहन—जब तक मैं ब्याह न कर लूँगा तब तक पचीस वर्ष का न होऊँगा।

१९८

आस्ट्रेलिया के एक नवयुवक ने फ्रान्स में जाकर

एक जहाज में नौकरी के लिए दरख्वास्त दी। जहाज के कप्तान ने पूछा—तुम कभी समुद्र में गए हो ?

नवयुवक बोला—तो क्या आप यह समझते हैं कि मैं ऑस्ट्रेलिया से यहाँ तक साइकिल पर चढ़ कर आया हूँ ?

१९९

लड़का—मज़ी के लिए तुमने हारमोनियम ले लिया है दद्दा ! तो मेरे लिए भी एक साइकिल ले दो।

दद्दा—क्यों ?

लड़का—ताकि जब वह हारमोनियम बजाने लगें तो मैं भी चट घर से दूर भग जाऊँ, नहीं तो मेरे कान फट जाएँगे।

२००

कुछ देहाती सरकस देखने गए। वहाँ एक आदमी एक लड़की को तख्ते पर सुला कर और अपनी आँखों पर पट्टी बाँध कर कुछ दूर से इस तरह छुरी फेंकता था कि लड़की को तो न लगती, पर लड़की के कान, बाँह, जाँघ आदि के पास ही तख्ते पर चुभ जाती थी। उसने पहली छुरी उसके गले के पास चलाई और वह तख्ते में जा घुसी। देहाती दर्शक बोला—तिल भर ही चूका है। दूसरी बार निशाना अचूक होगा।

२०१

"क्यों मन्ना, तूने लल्ली को उसके पेट में क्यों मारा ?"

"क्या करूँ माँ, अँधेरे में निशाना ठीक न बैठा।"

२०२

कुछ लोग एक मुर्दा जलाने जा रहे थे। एक आदमी सिसकते सिसकते कुछ दूर छूट गया। एक राहगीर ने उससे पूछा—तुमको तो उसके मर जाने का सबसे ज्यादा दुःख लग रहा है ?

वह बोला—दुःख क्यों न लगेगा। मेरे तीन हजार रुपए डूब गए, अब कौन देगा ?

२०३

मैजिस्ट्रेट—(मुद्दई से) तो मुलजिम का व्यवहार इतना खतरनाक था ?

मुद्दई—जी हाँ, बेहद खतरनाक था—यहाँ तक कि लाचार होकर मुझे उसे कस कर दो लात लगा देना पड़ा।

२०४

"ले लँगडे, ये चार पैसे ले जा। लँगडा होना बुरा है, पर अन्धा होना तो बेहद ही बुरा है।"

भिखमङ्गा—जी हाँ! जब मैं अन्धा था, तो लोग मुझे खोटे पैसे देकर ही ठग लिया करते थे।

२०५

एक बुढ़िया की आँखें कमजोर थीं। एक दिन वह अपनी बहू को लिवाने गई। उसके घर एक बड़ा सा आईना रक्खा था, उसे देख कर वह एक चीख मार कर बोली—बहू, तुम भी अपने घर में कैसी भयङ्कर तस्वीर रखती हो।

बहू ने धीरे से कहा—माँ जी, आप आइने में अपना चेहरा देख रही हैं।

२०६

एक विद्यार्थी किसी अपराध में पकड़ा गया। मेजिस्ट्रेट ने पूछा—तुम्हारा कोई वकील है?

विद्यार्थी बोला—जी नहीं, मैं वकील नहीं करूँगा। मैं सारी बातें सच-सच कह देना चाहता हूँ।

२०७

एक आदमी सियालदह एक्सप्रेस से सफर कर रहा था, उसकी तेज रफ्तार को देख कर पास के एक दूसरे मुसाफिर से बोला—बस, इसी को तुम तूफान मेल कहते हो? रायपुर धमतरी लाइन की गाड़ी तो इतनी तेज चलती है कि तार के खम्भे एक जङ्गल की तरह दीखते हैं।

दूसरा मुसाफिर बोला—आप हमारी गाड़ी को नहीं पा सकते। हमारे उधर की गाड़ी से आप सरसों के खेतों

में होते चले जाइए, फिर लौकी के खेत, मूली के खेत वगैरह पार कर जाइए, पर सब रास्ते की तरह दीखते हैं।

२०८

क्लर्क—मेरी तो यही विनती है कि आप मेरी तनख्वाह बढ़ा दीजिए, क्योंकि मेरा विवाह हो गया है।

ऑफिसर—फिर इस बढ़ी हुई गृहस्थी को चलाने के लिए पैसा माँगोगे।

क्लर्क—जी नहीं, मेरी स्त्री जानती है कि मुझे कितना मिल रहा है। मैं तो सिर्फ अपने पॉकेट-खर्च के लिए गुप्त रूप से थोड़ा ज्यादा माँग रहा हूँ।

२०९

"ए बोधी, जरा सराय का रास्ता तो बताना।"

"आपने कैसे जाना कि मेरा नाम बोधी है?"

"महज एक अन्दाज था।"

"इसी प्रकार मेहरबानी करके सराय का भी अन्दाजा लगा लीजिए।"

२१०

प्रेमी—अगर मैं तुम्हें अपनी स्त्री बन जाने के लिए कहूँ, तो तुम नाराज हो जाओगी?

अप्रसन्न प्रेमिका—नहीं, बल्कि यदि मैंने तुम्हारी बात स्वीकार कर ली, तो मैं अपने को ही कोसूँगी।

२११

माँ—क्यों बेटा, मोजा पहन कर पाँव धो रहे हो ?

बेटा—लाचारी है, ठण्ढ के मारे मोजा पहनना ही पड़ता है।

२१२

एक हवाई जहाज जोरों से नीचे उतरने लगा। उसमें दो ही आदमी थे। एक चलाने वाला और दूसरा उसका मित्र। चलाने वाले ने कहा—इसको इस तेजी से उतरते देख कर नीचे के पचास फी सदी लोग यह समझे होंगे कि यह गिर रहा है।

मित्र ने कहा—जी हाँ, और ऊपर भी पचास फी सदी लोगों का यही ख्याल था।

२१३

"मैं तुम्हारे हित के लिए तुम्हें कहता हूँ। मैंने सुना है कि तुम बहुत सी कुँवारी कन्याओं के हृदय में वृथा ही आशा का अङ्कुर उत्पन्न कर रहे हो। शायद सुरालपुर में तुमने एक कन्या के साथ अपना विवाह ठीक किया है, कानपुर में दूसरा और यहाँ तीसरा। ताज्जुब की बात है कि यह सब तुम कैसे कर सकते हो।"

"क्यों, मुश्किल क्या है ? इसी के लिए तो साइकिल खरीदी है।"

२१४

"उस साड़ी का दाम क्या था ?"

"एक सौ तीस रुपए।"

"ऐसी बहुत सी साड़ियाँ बेची हैं क्या ?"

"सैकड़ों, आपके लिए भी तैयार कराऊँ क्या ?"

"नहीं, मैं इनकमटैक्स ऑफिस से पता लगाने आया था कि तुम्हारा रोजगार कैसा चल रहा है।"

२१५

एक गुजराती पुलिस-कर्मचारी विदेश गया था। वहाँ एक दूसरे भारतीय को देख कर उसे बड़ी खुशी हुई और उससे परिचय प्राप्त करते हुए बोला—लाओ, हाथ मिलाओ।

भारतीय ने कहा—जी हाँ, मैं गुजरात प्रदेश से आया हूँ।

पुलिस-कर्मचारी बोला—तब तो दोनों हाथ लाओ।

२१६

"इसके पहले कि तुमको मैं अपने यहाँ कोई नौकरी दूँ, मैं तुम्हारी बुद्धि की परीक्षा करना चाहता हूँ।"

"बुद्धि की परीक्षा ? पर विज्ञापन में तो आपने सिर्फ एक सङ्गीत प्रेमी ही की जरूरत बतलाई थी।"

२१७

पत्नी—कल रात को बादल खूब गरजा और आँधी खूब चली।

पति—तो तुमने मुझे उठाया क्यों नहीं? तुम नहीं जानतीं कि इस हालत में मैं कभी सो नहीं सकता?

२१८

"तो तुम कितने दिन के लिए फौज में भरती होना चाहते हो?"

"जब तक जारी रहे।"

"पर आजकल कोई लड़ाई जारी नहीं है।"

"मेरा मतलब था कि जब तक शान्ति जारी रहे।"

२१९

प्रेमिका—जब से मैं पैदा हुई हूँ, तभी से मेरे हरेक जन्मोत्सव में मेरे बाप ने मुझे दस रुपए देने का वचन दिया था। आज इस प्रकार मेरे पास १६० रुपए जमा हैं।

विवाह की इच्छा रखने वाला प्रेमी—बाकी का रुपया वे कब दे देंगे?

२२०

एक अमेरिकन महिला एक वृद्ध धनी अमेरिका पुरुष से विवाह की इच्छा से उसके पास गई। वृद्ध ने पूछा—इसके पहले तुम्हारे कितने विवाह हो चुके हैं?

महिला ने कहा—आप मेरी स्मरण-शक्ति की परीक्ष
लेना चाहते हैं? इसमें फेल न होऊंगी। मेरे पाँच विवा
हो चुके हैं।

२२१

वृद्ध—तुम दिन में कितने बोतल शराब पी जाते हो
नवयुवक—चार से ज्यादा नहीं।
वृद्ध—इतना तो मैं पानी नहीं पी सकता।
नवयुवक—और मैं भी।

२२२

एक दक्षिणी बनारस की एक गली में जाकर अपने
घर का रास्ता भूल गया। पास खेलते हुए लड़के से
बोला—मैं हरिश्चन्द्र घाट १०३ नम्बर के मकान में जाना
चाहता हूँ।

लड़का बोला—तो क्यों नहीं चले जाते?

२२३

"मेरी लड़की से विवाह करते ही उसने मुझ पर पाँच
हजार की नालिश ठोंक दी।"

"और तुमने उनसे कुछ लिया था?"

"जी नहीं, सिर्फ लड़की मेरे घर में रहती है।"

२२४

एक मजेदार मुकदमा चल रहा था। मैजिस्ट्रेट बारह

जूरी के साथ मुद्दई की फरियाद सुन रहे थे। उसके चौबीस सुअर रेलवे कर्मचारियों ने मार डाले थे। अपराध की गम्भीरता बताते हुए मुद्दई ने कहा—चौबीस सुअर! सरकार चौबीस। जितने आपके पास बैठे हैं, उससे दुगने सुअर थे।

२२५

एक लड़का—जी नहीं, मैं इस मछली को बेचना नहीं चाहता।

चालाक आदमी—उसे नाप तो लेने दो, ताकि मैं ठीक से बता सकूँ कि मेरी मछली जो चुरा ली गई थी, वह कितनी बड़ी थी।

२२६

बड़े दिन की छुट्टी होने के पहले मास्टर साहब क्लास में बोले—जाओ लड़को, खूब मौज करना और जब छुट्टी के बाद आना तो खोपड़ी में जरा अक्ल लेकर आना।

लड़के—और आप भी मास्टर साहब!

२२७

एक वकील—तो तुम्हारा बड़ा भाई बड़ा बेवकूफ है, वह क्या करता है?

एक लड़का—वह वकील है।



२२८

माँ—(नाराज़ होकर) पर तुमने उस छोकरे के हाथ उस वक्त क्यों नहीं काट लिए, जब वह जेवर की थैली लिए हुए था ?

बेटा—माँ, तुमने ही तो यह सिखाया था कि किसी के काम में बाधा न डालना चाहिए।

२२९

एक कञ्जूस आदमी एक जोड़ा धोती खरीदने गया। दूकानदार ने कहा—दोनों का दाम दो रुपए होगा।

कञ्जूस ने पूछा—इसमें से एक का दाम क्या होगा ?

दूकानदार बोला—एक रुपया तीन आना।

कञ्जूस प्रसन्न होकर बोला—अच्छा, तो मैं दूसरी धोती ही ले लूँगा।

२३०

एक हकीम की दूकान के बाहर साइनबोर्ड में "सफाखाना" लिखा हुआ था। उसकी यह गलती एक राहगीर को बहुत खटकी और वह हकीम जी से बोला—यहाँ "शफाखाना" लिखा जाना चाहिए। क्या आज तक किसी भी आदमी ने आपको यह गलती नहीं बताई ?

हकीम ने जवाब दिया—सैकड़ों ने। आप ही की

तरह इस गलती ही को सुधारने, वे मेरी दूकान पर आते हैं और फिर मैं उन्हें अपना ग्राहक बना लेता हूँ।

२३१

उपदेशक—क्यों जी, इसका व्याख्यान कैसा था?

एक श्रोता—बहुत ही उपदेशपूर्ण। आपके यहाँ आने के पहले हम लोग पाप का नाम भी नहीं जानते थे।

२३२

नाना—बेटी, अब मैं तेरा विवाह कर दूँगा। तू ससुराल चली जायगी।

नतिनी—लेकिन मैं अपनी नानी को नहीं छोड़ना चाहती।

नाना—उसे भी साथ ले जाना।

२३३

एक आदमी स्टेशन के प्लेटफार्म पर उदास घूम रहा था। उसके एक मित्र ने पूछा—आज इतने उदास क्यों हो रहे हो?

आदमी—क्या करूँ? एक मिनट पहले गाड़ी छूट गई। बड़ा जरूरी काम था।

मित्र—वाह! मिनट-दो मिनट की क्या चिन्ता? घण्टा आध घण्टा होता, तो कोई बात भी थी।

२३४

पोता—बाबा, मुझे अपच हो गया है।

दादा—तो मैं क्या करूँ?

पोता—कोई चीज पचाने को दीजिए। मुझे आराम हो जायगा।

२३५

फेरी वाला—किसी को चाकू-कैंची तेज कराना है?

एक गृहस्थ—और तुम बुद्धि भी तेज कर सकते हो?

फेरी वाला—जी हाँ, आपके पास है क्या?

२३६

एक नवयुवक अपनी नवविवाहिता पत्नी को छोड़ कर विदेश जा रहा था। वह बोला—प्राणाधिके, जब मैं तुमसे दूर रहूँगा, तब उस तारे की ओर देख कर तुम मेरी याद किया करोगी न?

पत्नी—अवश्य प्रियतम! उसमें और तुममें इतनी समानता है कि उसे देखते ही तुम्हारी याद आएगी।

नवयुवक—यह कैसे?

पत्नी—क्योंकि वह बहुत रात बीते तो उदय होता है और प्रातःकाल पीला पड़ जाता है।

२३७

"ईमानदारी किसे कहते हैं?"

"यह तो समझाना कठिन है, पर हाँ, जैसे मैंने बैङ्क को पचास रुपए का एक चेक दिया और क्लर्क ने गलती से मुझे साठ रुपए दे दिए। उसे ले जाकर मैंने घर में अपनी स्त्री को बतला दिया, तो उसे ईमानदारी कहेंगे।"

२३८

स्त्री—मैं तुमसे विवाह करने के लिए व्याकुल नहीं थी। मैंने तुमसे पाँच बार इन्कार कर दिया था।

पति—तो भी मेरे दुर्भाग्य ने मेरा पीछा न छोड़ा।

२३९

नकली ज्योतिषी—तुम्हारा पति स्वर्ग से तुम्हें हुक्म दे रहा है कि तुम इस गरीब ब्राह्मण को पैसा दो।

एक विधवा—हुक्म दे रहा है? तब वह मेरा पति नहीं हो सकता।

२४०

पति—"हम सौ वर्ष कैसे जिएँ" वाला लेख तुमने उस अखबार से काट लिया?

पत्नी—जी हाँ, मुझे डर था कि कहीं आप उसे न पढ़ लें।

२४१

क्लर्क—(नौकरी की तलाश में) सरकार, दस्तखत करने के लिए मेरे पास कलम या पेन्सिल नहीं है।

ऑफिसर—बिना हथियार के लड़ाई के मैदान में जाने वाले को तुम क्या कहोगे ?

"ऑफिसर !"

२४२

एक मोटर वाला अपनी मोटर तेजी से ले जा रहा था। रास्ते में एक गधे की गाडी सामने आ गई और उसे मोटर रोकनी पडी। दिल्लगी करते हुए उसने उस गाडी वाले से पूछा—तुम्हारी और मेरी गाडी में क्या फर्क है ?

गाडी वाला बोला—बहुत थोडा। एक में गधा जुता हुआ है। दूसरे में गाडी पर बैठा हुआ है।

२४३

एक मुसाफिर घबडाहट से—हम लोग जरूर किसी आदमी के ऊपर से मोटर चला आए हैं।

मोटर वाला—(जिसे कुहरे में कुछ नहीं दीख रहा था) चलो, धीरज तो बँधा ! अब तक हमारी मोटर सडक पर ही है।

२४४

एक शौकीन मोटर खरीदने गया। उसने एक बडी-सी मोटर सामने देख कर सोचा, शायद इसका दाम ज्यादा हो, इससे उसने दूकानदार को एक छोटी गाडी दिखाते हुए पूछा—इसका क्या दाम है ?

दूकानदार—साढ़े चार हजार।

उसने उससे भी छोटी मोटर को दिखा कर पूछा—और इसका?

दूकानदार—पाँच हजार।

शौक़ीन—और अगर मैं बिलकुल ही कोई गाडी न खरीदूँ तो कितने दाम लगेंगे?

२४५

रामू—(टेलीफ़ोन से) डॉक्टर साहब, जल्दी आइए, मेरी बच्ची एक दुअन्नी निगल गई है।

डॉक्टर—(टेलीफ़ोन से) कितने की है?

रामू—१८८१ की है।

२४६

"लेकिन जब लुटेरों ने आखिरी बात कही, तो मुझे कुछ खुशी हुई।"

"वह क्या?"

"उन्होंने कहा—अगर तुम अपना खजाना न बताओगे, तो हम लोग तुम्हारी स्त्री को उठा ले जायँगे।

२४७

स्त्री—जब मैं गाना गाने लगती हूँ, तो तुम बाहर क्यों चले जाते हो? मेरा गाना तुमको पसन्द नहीं है क्या?

पुरुष—यह बात नहीं है। मैं इसलिए बाहर चला

जाता हूँ, ताकि लोगों को यह मालूम हो जाय कि मैं तुमको मार नहीं रहा हूँ।

२४८

"तो तुम अमेरिका जा रहे हो। तुम तो जानते ही होगे कि जब यहाँ रात रहती है तो वहाँ दिन रहता है।"

"हाँ, पहले-पहल तो बड़ा अचरज लगेगा।"

२४९

स्त्री—मेरी बहिन की उम्र चौबीस वर्ष की है।

पति—उसने तो मुझे बीस साल ही बतलाया था।

स्त्री—ठीक है, चार साल की उम्र तक वह गिनना ही नहीं जानती थी।

२५०

एक नवयुवक घर जाने के समय एक खिलौने की दूकान पर आया। दूकानदार भीतर था और उसकी छोटी लडकी बाहर बैठी थी। नवयुवक बोला—सिर्फ दिल्लगी के लिए ही मैं अपनी स्त्री को कोई अजीब और बदसूरत-सी चीज देना चाहता हूँ। है कुछ?

लडकी ने भीतर की ओर मुँह करके कहा—दद्दा, यहाँ आओ, तुम्हारी जरूरत है।

२५१

प्रेमिका—चुम्बन के विषय पर तो बड़े-बड़े ग्रन्थ लिखे जा सकते हैं।

प्रेमी—एक नई लाइब्रेरी खोलने में क्या तुम मेरी सहायता करोगी ?

२५२

"आपने मुझे जो पद लिख कर दिए थे, वह मैंने अपने बाप को दिखाए, वे बहुत खुश हुए।

"क्यों ?"

"उन्हें यह जान कर बड़ी खुशी हुई कि मैं एक कवि से अपना विवाह करना नहीं चाहती।"

२५३

पत्नी—प्यारे, तुम इतनी शराब मत पिया करो। नहीं जानते कि शराब मनुष्य का शत्रु है ?

पति—तभी तो मैं उसको खतम कर देना चाहता हूँ।

२५४

एक किरायेदार आधी रात को घबराहट से मालिक-मकान के पास दौड़ा गया और उसे उठा कर बोला—'अगर कोई औरत अपने खाविन्द से लड़-लड़ कर पड़ोसियों की नींद खराब करती हो, तो क्या आप उसे रोक सकते हैं ?

मालिक मकान—आप पडोसी हैं ?

किरायदार—नहीं, मैं खाविन्द हूँ।

२५५

मदोन्मत्त—ए सनम, जिसने तुझे चाँद-सी सूरत दी है, उसी अल्लाह ने मुझको भी मुहब्बत दी है।

एक सती स्त्री—और उसी अल्लाह ने पुलिस भी तो बनाई है।

२५६

"कोई अच्छी से अच्छी ऐसी संस्था का नाम तो बताओ, जहाँ स्त्री-पुरुष साथ ही उचित शिक्षा प्राप्त कर सकें।"

"विवाह।"

२५७

"ड . ड...डॉक्टर साहब, अ अ आपके प पास म य मेरी इस बि बिमारी की को कोई द दवाई है?"

डॉक्टर—क्या तुम्हारी जबान हमेशा ऐसा ही लड-खडाती है ?

मरीज—ह हमेशा न नहीं ज जब वो बो . बोलता हूँ त तभी ल. .ड लड ख खडाती है।

२५८

"कल शाम को मैंने तुम्हारे पति को देखा, पर उन्होंने शायद मुझे नहीं देखा।"

"जी हाँ, कल यही बात वह भी कह रहे थे।"

२५९

बेटा—माँ, इस गरीब अन्धी को एक धेला तो दे दो। भूख के मारे बेचारा एक चवन्नी माँग रहा था।

माँ—हाँ, अन्धा है तो एक धेला दे दो।

२६०

मालिक-मकान—तुम यहाँ चार महीने से रह रहे हो, पर आज तक एक पैसा किराया नहीं दिया।

किरायदार—आपने तो कहा था कि इसे घर ही समझना।

मालिक—फिर ?

किरायदार—मैं अपने घर पर कभी किराया नहीं देता।

२६१

बाप—तुम लोगों की तरह कभी भी लोगों के लुभाने के लिए तुम्हारी माँ ने बनाव सिंगार नहीं किया।

बेटी—तभी तो उन्हें आप मिले।

२६२

खुशामदी पति—प्रिये, एक बार तो वह बात कह दो, जिससे स्वर्ग का सुख मिल जाय।

क्रोधित पत्नी—जाओ, अपने को गोली मार लो।

२६३

"अब स्त्रियों पर मेरा जरा भी विश्वास न रहा।"

"क्यों?"

"मैंने अपने विवाह का केअर ऑफ 'लीडर' विज्ञापन छपवाया और जवाब देने वालियों में से एक मेरी स्त्री भी थी।"

२६४

"क्यों? पागलपने के कारण तलाक होता है क्या?"

"नहीं, वह विवाह का कारण है।"

२६५

परदेशी—(लोगों को एक मुर्दा ले जाते देख कर) कौन मर गया है?

एक लड़का—वही, जिसके लिए आज सवेरे से चिता बनाई जा रही थी।

२६६

मुलाकाती—(अपने मित्र के पाँच वर्ष के लड़के की प्रशंसा करते हुए) उसकी नाक तो उसके बाप की ही है।

मित्र—और उसकी आँख उसकी माँ की हैं।

लड़का—और यह कोट मेरे भाई का है।

२६७

पुलिसमैन—जब आप इतनी तेज मोटर चला रही थीं तो मोड़ पर आपको रोकते ही मैंने दिल ही में सोच लिया 'पैंतालिस'।

महिला—पैंतालिस आपने कैसे समझा ? मेरी उम्र तो अभी तीस ही है।

२६८

मरीज—डॉक्टर साहब, आपकी ही दया से मुझे आराम हुआ है।

डॉक्टर—सब परमेश्वर की कृपा है।

मरीज—तब तो परमेश्वर के पास ही पैसा भेज दूँगा।

२६९

"तो क्या तुमको यह विश्वास है कि तुम्हारी स्त्री जीवन सग्राम के लिए उपयुक्त है ?

"अवश्य, रोज सवेरे-शाम वह मुझसे लड़ती है।"

"पर यह तो जीवन सग्राम नहीं है। इसे तो पति-सग्राम कहना चाहिए।"

"वह मुझको ही अपना जीवन कहती है।"

२७०

माँ—और जब कोई मेहमान आता है, तब तो यह लडका दुगुना खा जाता है।

मेहमान—क्यों लडके ?

लडका—क्योंकि जब कोई मेहमान आता है, तभी पूरा खाना भी तो मिलता है।

२७१

रामू—सबसे अधिक तुमको कौन सा लेखक पसन्द है?

प्रभू—मेरे बाप।

रामू—क्यों ?

प्रभू—क्योंकि वे मेरी तमाम छुट्टी की दरख्वास्तों पर अपना दस्तखत चुपचाप कर देते हैं।

२७२

एक करोडपति के घर में जुडवाँ बच्चे पैदा हुए थे। दूसरा बच्चा केवल एक मिनट बाद ही हुआ था। पर जब वह करोडपति मरने लगा, तो उसने वसीयतनामा लिखा—"जब तक बडा लडका (जो पहले पैदा हुआ था) जीवित रहेगा, तब तक मेरी सारी जायदाद, ५२ लाख नकद, ४६ गाँव, ७५ लाख रोजगार में, ६ लाख जेवर आदि का मालिक वही रहेगा।" जब छोटा भाई पैसठ वर्ष का हो गया, तो उसका एक मित्र एक दिन उसे अपने व्यापार



का घाटा सुनाने लगा। वह बोला—मित्र! गत वर्ष केवल पन्द्रह मिनट की देरी होने के कारण मुझे एक हजार का घाटा उठाना पड़ा।

छोटा भाई—तुमको तो पन्द्रह मिनट की देरी से केवल एक हजार का घाटा हुआ, पर मैं तो पैदा होते समय केवल एक मिनट की देरी से आज पैंसठ वर्ष तक ५३ लाख नकद, ४६ गाँव, ७५ लाख का व्यापार और ६ लाख के जेवर के घाटे में पड़ा हुआ हूँ जनाब!

२७३

"मेरी स्त्री सचमुच मेरी बड़ी सेवा करती है। यहाँ तक कि वह मेरे जूते भी अपने हाथ से उतारती है।"

"तुम जब कहीं से आते हो तब?"

"नहीं, जब मैं कहीं जाने लगता हूँ तब।"

२७४

एक दिन एक बच्चे के सिर में बड़े जोर से दर्द हो रहा था। उसकी दादी ने कहा—"आ बच्चा, मैं तेरा मुँह चूम लूँ। तेरा दर्द दूर हो जावेगा।" कुछ दिन बाद वह बच्चा दौड़ा हुआ आया और बोला—"दादी, मेरे साईस के सिर में बड़ा दर्द हो रहा है।"

दादी ने कहा—तो मैं क्या करूँ!

बच्चा बोल उठा—उसका मुँह चूम लो तो उसका दर्द दूर हो जाय।

२७५

पत्नी—मैंने कल रात को सपने में देखा कि आपने मेरे लिए एक नया चन्द्रहार बनवाया है। क्या मेरा सपना झूठ ही निकलेगा?

पति—और मैंने भी सपना देखा है कि तुमने खुद ही उस चन्द्रहार के दाम दिए हैं। क्या मेरा सपना भी झूठ ही निकलेगा?

२७६

"आश्चर्य की बात है 'विजय' का द्योतक चित्र सदैव स्त्री का होता है।"

"आश्चर्य की बात नहीं है। पुरुष और स्त्री में सदैव स्त्री की ही विजय होती है, इसी से ऐसा बनवाया जाता है।"

२७७

एक नाट्यशाला में एक आदमी अपनी स्त्री से बेहद बातें कर रहा था। उसके पीछे एक सज्जन बैठे थे, जिन्हें इन लोगों की बातचीत के मारे कुछ भी सुनाई नहीं पड़ रहा था। जब उनसे न रहा गया, तो उन्होंने उस बातूनी से कहा—आप इस तरह से बातचीत कर रहे हैं कि जो कुछ कहा जा रहा है, कुछ भी समझ में नहीं आता।

बातूनी ने कहा—महाशय जी, अपनी स्त्री से मैं जो

कुछ कह रहा हूँ, उसके सुनने से आपको कोई भी लाभ न होगा।

२७८

एक स्त्री—मेरी उम्र कोई तो पचीस बताता है, कोई तीस, आपकी क्या राय है?

उसका एक पुरुष-मित्र—दोनों मिला कर जोड़ो।

२७९

दो सज्जन एक मोटर पर चढ़ कर किसी स्थान को जा रहे थे। एक गली के पास मोटर खड़ी हो गई। गली बहुत ही तङ्ग थी। मोटर वाले ने कहा—साहब, यह गली बहुत ही तङ्ग है। मुश्किल से इसमें दो गधे चल सकते हैं। इससे आप लोग इसमें पैदल ही जाइए। तकलीफ तो होगी, पर लाचारी है।

२८०

दो मित्रों ने आपस में एक शर्त बदी। दोनों एक एक बात खूब बढ़ा-चढ़ा कर कहेंगे। अगर किसी ने एक-दूसरे को झूठा कह दिया, तो उसे पाँच रुपए देने पड़ेंगे। पहले ने पाँच रुपए पाने की नियत से खूब बात बढ़ाई। बोला—हम लोग बम्बई से जहाज में रवाना हुए। हमारे पीछे ही एक मनुष्य ने समुद्र में गोता लगाया और भीतर ही भीतर जहाज का पीछा करता रहा और हमसे पाँच मिनट आगे अदन जा पहुँचा।

दूसरा बोला—ठीक है, वह आदमी मैं ही था।
पहला—तुम नहीं थे। वह दूसरा ..
दूसरा—बस अब लाओ पाँच रुपए।

२८१

एक रईस ने मथुरा जी के चौवे से पूछा—क्या आप तामिल समझ सकते हैं?

चौवे जी ने पेट पर हाथ फेरते-फेरते कहा—हाँ सरकार, यदि वह भाषा में बोली जावे!

२८२

एक हँसोड़ आदमी को किसी फोजदारी मुकदमे में गवाही देने जाना पड़ा। एक वकील ने, जो जिरह में बड़े बदनाम थे, उससे पूछा—"जब लड़ाई हुई तो तुम लड़ने वालों से कितनी दूर थे।" हँसोड़ ने जवाब दिया—"ठीक तीन फुट, पाँच इञ्च, चार अङ्गुल और सात सूत की दूरी पर मैं खड़ा था।" वकील ने खीज कर कहा—"यह बिलकुल झूठ मालूम होता है। भला यह कैसे मुमकिन है कि तुमने इतना ठीक फासला नापा हो?" उस मनुष्य ने डपट कर कहा—"मैं पहिले ही से जानता था कि कोई उल्लू का पट्ठा मुझसे ऐसे सवाल करेगा।"

२८३

एक बङ्गाली महाशय छकौड़ी बाबू के मर जाने की

झूठी खबर बहुत बार सुन चुके थे। अब उनका कहना है कि जब तक यह खबर मैं स्वयम् छकौड़ी बाबू के मुँह से न सुन लूँगा, कभी सच न मानूँगा।

२८४

"पिता जी, आपने उस बच्चे का विचित्र हाल सुना है, जिसका वजन हाथी का दूध पीने से केवल चार दिनों में पचास पाउण्ड बढ़ गया ?"

पिता ने झुँझला कर कहा—बात बिलकुल झूठी है। भला यह बच्चा था किसका ?

लड़के ने भोलेपन से कहा—पिता जी, यह हाथी का बच्चा था !

२८५

"वकील साहब ! आपके दफ़्तर में तो इतनी ज्यादा गरमी है कि मैं बैठ नहीं सकता। घर भट्टी की तरह तप रहा है।"

वकील महाशय ने चट जवाब दिया—भाई ! इसका भट्टी की तरह तपना बहुत जरूरी है, क्योंकि यहीं तो मैं अपनी रोटी पकाता हूँ।

२८६

अध्यापिका ने श्रेणी में खड़े होकर कन्याओं को एक ऐसा चित्र बनाने को कहा, जिसमें एक दरिया बहता हो



और उसके किनारे मछलियाँ बैठी हों। सभों ने अपना कार्य आरम्भ कर दिया। सरला और कमला को चित्रकारी बहुत कम आती थी, वे चुपचाप बैठी रहीं। अध्यापिका के कॉपी माँगने पर उन दोनों ने दरिया का चित्र तो दिखा दिया, पर उस पर वे मछली न बना सकीं। गुरु जी ने बहुत डाँटा।

कमला—देखें, मैंने अभी किनारे पर दो मछलियाँ बनाई थीं, न मालूम वोह कहाँ चली गईं। मेरा ख्याल है, वो फिर पानी में घुस गई होंगी।

सरला—गुरु जी, क्षमा करें, मुझे चित्रकारी का बहुत ज्ञान नहीं है। मैं किनारे पर मछली इसीलिए न बिठा सकी, पर वहाँ लिख दिया है कि Tresspasser will be prosecuted अर्थात्—"इधर आने वाला गिरफ्तार कर लिया जावेगा।"

२८७

मोहन ने कहा—भाई घनश्याम, तुम्हारी स्त्री तो बहुत ही नाटी है।

घनश्याम ने कहा—भाई, बला जितनी छोटी हो उतनी ही अच्छी है!

२८८

अदालत में एक मनुष्य का किसी के ऊपर आक्रमण

करने का मामला पेश था। मुद्दई के वकील ने बड़ी जिरह के साथ कई बार अभियुक्त से पूछा कि तुमने किस चीज से मारा है, किन्तु अभियुक्त ने बार बार यही कहा—"मैंने सिर्फ ढकेल दिया था।"

वकील ने पूछा—कितनी जोर से ढकेला था?

अभियुक्त—बहुत धीरे से।

वकील अभियुक्त की चालाकी से खीझ गया और बोला—अच्छा, जिसमें अदालत तथा जूरी अपनी आँखों से देख सके, इसलिए तुम मेरे पास आकर और उसी तरह मुझे धक्का देकर बतलाओ कि तुमने उसे किस तरह ढकेला था।

अभियुक्त यह सुन कर वकील के पास चला आया और पास आते ही पहिले तो उसने वकील के मुँह पर बड़े जोर का तमाचा मारा और इसके बाद वकील को उठा कर उसने बड़े जोर से जमीन पर दे मारा।

वकील को इस तरह पटक चुकने के बाद वह अभियुक्त जज की ओर घूम कर कहने लगा—हुजूर! जिस तरह मैंने वकील साहब को ढकेला है, इससे भी दसवाँ हिस्सा धीरे उसे धका दिया था!

२८९

एक मिल के मैनेजर के पास एक बौखलाया हुआ

मनुष्य आकर कहने लगा कि—"आपके यहाँ जितने नौकर हैं, उन सभों को देखते ही मैं बतला दूँगा कि किस शख्स की शादी हो गई है और किसकी नहीं।"

मेनेजर ने पहिले तो उसे टाल देना चाहा, किन्तु उसके बहुत जोर देने पर उन्होंने उसकी बात मन्जूर कर ली। मेनेजर की आज्ञानुसार मिल के सभी कर्मचारी एक एक करके मेनेजर के पास आते गए और वह मनुष्य सचमुच ब्याहे हुए मनुष्यों को अलग करता गया कि इनका विवाह हो गया है। इस प्रकार सबों की परीक्षा हो चुकने के बाद जब सबकी जाँच की गई, तो मालूम हुआ कि उसका अन्दाज बिलकुल ठीक उतरा। मेनेजर यह देख कर चकरा गए और उन्होंने बडी नम्रता के साथ उससे पूछा कि आपने किस बात से यह पहिचान कर लिया?

वह बोला—यह तो बडी साधारण पहिचान है। जितने लोग आपके पास आए, उनमें जिनका-जिनका विवाह हो गया था, उन्होंने तो पायदान पर अपना पैर पोंछ कर आपके कमरे में प्रवेश किया और जिनका विवाह नहीं हुआ, वे सब बिना पैर पोंछे ही धडधडाते चले आए। बिना व्याहे मस्त मौला हैं और व्याहे हुओं को भय था कि कहीं नौकरी से हाथ न धोना पडे।

२९०

सड़क पर लड़ने के कारण एक कॉन्सटेबिल ने बिगड़े खाँ का चालान कर दिया। मैजिस्ट्रेट के सामने मामला पेश होने पर मैजिस्ट्रेट ने पूछा—तुम क्यों फलाँ आदमी को मार रहे थे?

बिगड़े खाँ बिगड़ कर बोले—हुजूर, उसकी औरत ने मुझे गालियाँ दी थीं, मैंने औरत पर हाथ छोड़ना ठीक न समझ कर, उसके मर्द की मरम्मत की। आप ही फरमाइए, क्या बेजा किया?

२९१

मुन्शी सूमचन्द बड़े मक्खीचूस आदमी थे। जिससे उधार लेते, उसे देना वह जानते ही न थे। एक दूकानदार ने अपने नौकर को मुन्शी सूमचन्द के पास दस-बारह मर्तबे बिल वसूल करने के लिए भेजा, किन्तु बार-बार वह हीला-हवाला कर दिया करते थे।

एक दिन चपरासी दुकान से बहुत बिगड़ कर चला कि आज मुन्शी ने अगर रुपए न दिए, तो जबर्दस्ती वसूल करूँगा। संयोग से मुन्शी जी भी घर में मौजूद थे। नौकर जरा तेज होकर मुन्शी जी से कहने लगा—साहब, आज आप सब रुपए दे दीजिए, नहीं तो अच्छा न होगा।

मुन्शी जी जरा गम्भीर मुँह बना कर बोले—तुम कैसे पागल हो ? मैं तो तुम्हारी नौकरी कायम रखने के लिये रुपए नहीं देता, अगर मैं तुम्हें रुपए चुका दूँ, तो तुम्हारे मालिक तुम्हें कल ही नौकरी पर से हटा दें। जब तक मैं रुपए नहीं देता, तब तक झख मार कर उन्हें तुम्हें रखना पडेगा।

चपरासी मुन्शी जी की बातों में आ गया और उन्हें इस कृपा के लिए धन्यवाद देते हुए लौट गया !

२९२

लाला बातूनीलाल बातें लडाने में बडे तेज थे। दैव योग से एक दिन छत की मुँडेरी पर बैठे-बैठे आप नीचे आ गिरे और एक आँख इनकी इस गिरने में बेकाम हो गई। आँख का इलाज कराने के लिए आपको अस्पताल की शरण लेनी पडी।

एक दिन इन्होंने अपनी आँख में दवा छुडाते हुए डॉक्टर से कहा—डॉक्टर साहब ! मैं शर्त लगा कर कहता हूँ, आपके दो आँखें होते हुए भी मैं एक ही आँख से आपसे ज्यादा देख सकता हूँ।

डॉक्टर ने आश्चर्य में होकर पूछा—कैसे ?

लाला साहब बोले—यह इस तरह कि मैं तो आपके चेहरे पर दो आँखें देखता हूँ और आप मेरे मुँह पर

मुन्शी जी जरा गम्भीर मुँह बना कर बोले—तुम कैसे पागल हो ? मैं तो तुम्हारी नौकरी कायम रखने के लिये रुपए नहीं देता, अगर मैं तुम्हें रुपए चुका दूँ, तो तुम्हारे मालिक तुम्हें कल ही नौकरी पर से हटा दें। जब तक मैं रुपए नहीं देता, तब तक झख मार कर उन्हें तुम्हे रखना पडेगा।

चपरासी मुन्शी जी की बातों में आ गया और उन्हें इस कृपा के लिए धन्यवाद देते हुए लौट गया !

२९२

लाला बातूनीलाल बातें लडाने में बडे तेज थे। दैव योग से एक दिन छत की मुँडेरी पर बैठे-बैठे आप नीचे आ गिरे और एक आँख इनकी इस गिरने में बेकाम हो गई। आँख का इलाज कराने के लिए आपको अस्पताल की शरण लेनी पडी।

एक दिन इन्होंने अपनी आँख में दवा छुडाते हुए डॉक्टर से कहा—डॉक्टर साहब ! मैं शर्त लगा कर कहता हूँ, आपके दो आँखें होते हुए भी मैं एक ही आँख से आपसे ज्यादा देख सकता हूँ।

डॉक्टर ने आश्चर्य में होकर पूछा—कैसे ?

लाला साहब बोले—यह इस तरह कि मैं तो आपके चेहरे पर दो आँखें देखता हूँ और आप मेरे मुँह पर

केवल एक ही आँख देखते हैं। इसलिए मैं आप से अधिक देखता हूँ॥

२९३

चन्द्रकान्त के यहाँ दौलतसिंह बहुत आया-जाया करते थे। एक दिन चन्द्रकान्त की स्त्री ने चन्द्रकान्त से कहा—दौलतसिंह तो आपके बड़े सच्चे मित्र मालूम होते हैं। क्या सचमुच मेरा यह ख़्याल ठीक है?

चन्द्रकान्त ने सर खुजलाते हुए कहा—मैं कह नहीं सकता, क्योंकि अभी तक तो मैंने उनसे रुपए कर्ज़ लेकर उनकी परीक्षा नहीं की है।

२९४

श्याम को सिसक सिसक कर रोते हुए देख कर उसके बाबा ने उससे पूछा—श्याम, क्यों रो रहे हो?

श्याम—हू हू हूँ। कैलाछ ने छुकर को उल्लू कहा है और छुकर ने कैलाछ को गधा कहा है।

बाबा—तो इसमें तुम्हारे रोने की कौन बात है?

श्याम—क्यों, लोने की बात क्यों नीं है! छुकर उल्लू है और कैलाछ गधा है, तो मैं फिर क्या हूँ? ऊँ ऊँ

२९५

कैलाश को सारी जलेबी खा जाते हुए देख कर उसके पिता ने कहा—क्यों कैलाश! तुम सारी जलेबी

खा गए और अपने छोटे भाई का ख्याल जरा भी नहीं किया ?

कैलाश ने भोली शक्ल बना कर कहा—पिता जी, मैं जब तक जलेबी खाता रहा, बराबर मुझे शैलेन्द्र का ख्याल रहा कि कहीं वह आ न जाय।

२९६

म्युनिसिपैलिटी की ओर से सडकों की मरम्मत हो रही थी। एक मजदूर पत्थर तोड रहा था। पत्थर पर उसने कई हथौडे चलाए, लेकिन वह न टूटा। यह देख कर मजदूरों की देख-रेख करने वाले मुशी जी ने उस मजदूर से कहा—"अरे, तू कैसा गधा है कि एक पत्थर को तोडने में घण्टों लगा दिए। इधर ला, मैं बतलाऊँ कैसे तोडा जाता है।" यह कह कर मुशी जी ने बडे जोर के एक ही घन में पत्थर को तोड दिया।

मजदूर ने यह देख कर मुस्कराते हुए उत्तर दिया—मुशी जी, तारीफ तब थी, जब पहिले ही एक हाथ में तोडते। मैंने चोटें लगा-लगा कर पहिले ही उसे मुलायम कर दिया था, तभी तो एक ही चोट में भूसा हो गया !

२९७

किसी पाठशाले मे एक पण्डित जी छोटे बालकों के दर्जे में पढा रहे थे। ज्ञान-सम्बधी कई बातें बतलाने के

बाद पण्डित जी ने १० वर्ष के एक बालक से प्रश्न किया—"तुम्हें किसने बनाया है ?" वह बालक कुछ उत्तर न दे सका। इस पर पास ही बैठी हुई एक पढ़ी-लिखी माँ के पाँच वर्ष के बालक ने उत्तर दिया—"ईश्वर ने हमें बनाया है।"

इस छोटे बालक के उत्तर को सुन कर १० वर्ष वाले लड़के ने पण्डित जी से कहा—पण्डित जी! रमेश ने इस सवाल का जवाब देकर क्या कमाल किया है! मूर्ख बालक बोला—ईश्वर को रमेश को बनाए हुए अभी केवल ५ वर्ष हुए हैं, इसलिए उसे बनाने वाले का स्मरण अभी तक है और मुझे तो १० वर्ष हो गए हैं, इसलिए मुझे याद नहीं रहा।

२९८

पण्डित कमलाकान्त के मकान पर सन्ध्या समय मित्रों की गोष्ठी बैठा करती थी। पण्डित कमलाकान्त थे तो बड़े विद्वान्, परन्तु साथ ही कुरूप भी बहुत थे। एक दिन बाबू कामताप्रसाद ने पण्डित जी से मज़ाक करते हुए कहा—पण्डित जी, परमात्मा जिस समय सुन्दरता लोगों को बाँट रहे थे, उस समय शायद आप ग़ैरहाज़िर थे।

पण्डित जी ने हँसते हुए कहा—हाँ साहब, उस समय मैं वहाँ था, जहाँ परमेश्वर बुद्धि बाँट रहे थे।

२९९

किसी गाँव में एक बडा गरीब किसान रहता था। दैव-कोप से उसके मकान की दीवार गिर पडी। दीवार के गिर जाने पर वह बेचारा अपने जमींदार के पास दौडा गया और बोला—साहेब, मोरे घरवा की एक भीत गिर गइल है, साहेब से बिनती हौ कि मोर कुछ मदद कीन जाय।

जमींदार ने कहा—उल्लू के पट्ठे! हमारी आम गली में तेरी दीवार आ पडी है, उसका हर्जाना तुझे देना पडेगा और तू आया है मदद माँगने।

किसान बेचारा दुखी होकर यह सोचते हुए चला गया कि "आए थे नमाज को और रोजा गले पडा।"

३००

बिरादरी में एक जगह मृत्यु हो जाने के कारण सेठ दामोदरदास ने अपने लडके को मातमपुरसी के लिए जाने को कहा। लडके को मातमपुरसी करने का पहले कभी इत्तफाक नहीं पडा था, उसने पिता से पूछा कि आखिर मुझे वहाँ जाकर क्या करना होगा?

पिता—अजब अहमक लडके हो। बडे आदमी के यहाँ की बात है, सैकड़ों लोग आवेंगे जो वह सब करें वही तुम भी करना। लड़का चला गया।

रास्ते में उसने दो-तीन मनुष्यों को मृतक के सम्बन्ध में ही बातें करते सुना। वे सब कह रहे थे—अच्छा हुआ कम्बख्त मर गया, बडा ही कौडी चिप्पस था।

विट्ठलदास ने क्या कहना होगा, सो समझ लिया। सेठ कालूराम सिर मुडाए नारियल पी रहे थे। विट्ठलदास बगल में बैठ कर बोला—लाला जी, भोला क्या बीमार था?

कालूराम—हाँ! कई दिन से उसे दस्त आते थे।

विट्ठल—चलिए अच्छा हुआ, मोहल्ले का पाप टला। कहिए कुछ, कम्बख्त था बडा कौडी-चिप्पस!

सेठ कालूराम—पुत्र-शोक से वैसे ही विह्वल हो रहे थे, उस पर इस बेवकूफ की बातें उन्हें बरदाश्त न हुईं। उन्होंने उसे पीटा भी और घर से बाहर धक्का देकर निकाल आए। सेठ दामोदरदास ने जब अपने सुपुत्र के कारनामे सुने, तो वे बहुत बिगडे और लडके को बहुत डाँटा।

चूँकि दामोदरदास तथा कालूराम का घनिष्ट व्यापारिना सम्बन्ध था, अतएव वे तुरन्त दौडते हुए सेठ कालूराम के पास पहुँच कर अपनी पगडी सेठ जी के पैरों पर रख दी और बहुत गिडगिडा कर कहने लगे—सेठ जी, माफ करो, लडका बिलकुल गदहा है, जरा भी कायदा नहीं जानता मैं। उसे भेज कर बारम्बार पछता रहा हूँ। यदि अब कभी आपके यहाँ ऐसा हादसा होगा तो मैं स्वयं हाजिर होऊँगा।

३०१

जज ने एक कैदी से कहा—क्यों, तुम्हारी शक्ल तो पहचानी हुई मालूम होती है ?

कैदी ने इतमीनान से उत्तर दिया—हम और आप तो लँगोटिया दोस्त हैं, साथ-साथ खेले थे।

जज ने बिगड़ कर कहा—चुप उल्लू के पट्ठे ! मेरा और तेरा साथ कैसा ?

कैदी ने गम्भीरता से कहा—हाँ-हाँ, सरकार ! ऐसा ही है, क्योंकि आपकी उम्र तिरेपन साल की है, और इतनी ही मेरी भी।

३०२

एक चोर कैदी का मुकदमा जज साहब के इजलास में पेश हुआ। जब जज साहब को मालूम हुआ कि कैदी की ओर से कोई वकील नहीं है, तो उन्होंने पास ही बैठे हुए एक वकील से कहा—आप इसके मुकदमे की पैरवी कर दीजिए और इसे बचाने के लिए आपसे जो कोशिश हो सके, उसे कीजिए।

उक्त नवयुवक वकील कैदी को सला[illegible]
बन्द कमरे में ले[illegible]
से कहन[illegible]
की

यह सुन कर बाहर चले आए। वकील को अकेले ही आते देख कर जज ने पूछा—"तुम्हारा मुवक्किल कहाँ है?"

वकील ने बड़े इतमीनान से उत्तर दिया—वह चला गया।

जज ने ताज्जुब में आकर पूछा—वह चला गया! इसका क्या मतलब कि वह चला गया?

वकील ने गम्भीरतापूर्वक कहा—इसमें आश्चर्य की बात क्या है? आपने मुझे आज्ञा दी थी कि जो सबसे अच्छी सलाह मैं कैदी को दे सकूँ, वह दूँ। मैंने उससे पूछा कि तुमने चोरी किया है, उसने कहा—'हाँ, अवश्य मैंने चोरी किया है।' इस पर मैंने सर्वोत्तम सलाह उसे यह दी कि वह दरवाजा खोल कर भाग जाय। उसने —ी और चलता बना।"

२०१

जज ने एक कैदी से कहा—क्यों, तुम्हारी शक्ल तो पहचानी हुई मालूम होती है ?

कैदी ने इतमीनान से उत्तर दिया—हम और आप तो लंगोटिया दोस्त हैं, साथ साथ खेले थे।

जज ने बिगड़ कर कहा—चुप उल्लू के पट्ठे! मेरा और तेरा साथ कैसा ?

कैदी ने गम्भीरता से कहा—हाँ-हाँ, सरकार! ऐसा ही है, क्योंकि आपकी उम्र तिरेपन साल की है, और इतनी ही मेरी भी।

२०२

एक चोर कैदी का मुकद्दमा जज साहब के इजलास में पेश हुआ। जब जज साहब को मालूम हुआ कि कैदी की ओर से कोई वकील नहीं है, तो उन्होंने पास ही बैठे हुए एक वकील से कहा—आप इसके मुकदमे की पैरवी कर दीजिए और इसे बचाने के लिए आपसे जो कोशिश हो सके, उसे कीजिए।

उक्त नवयुवक वकील कैदी को सलाह-मशविरा करने के लिए, एक बन्द कमरे में ले गए। जब बहुत देर हुई, तो जज ने एक सार्जण्ट से कहला भेजा—"जल्दी करो, अफसर लोग मुकद्दमे की इन्तजारी में बैठे हुए हैं।" वकील

यह सुन कर बाहर चले आए। वकील को अकेले ही आते देख कर जज ने पूछा—"तुम्हारा मुवक्किल कहाँ है?"

वकील ने बड़े इतमीनान से उत्तर दिया—वह चला गया।

जज ने ताज्जुब में आकर पूछा—वह चला गया! इसका क्या मतलब कि वह चला गया?

वकील ने गम्भीरतापूर्वक कहा—इसमें आश्चर्य की बात क्या है? आपने मुझे आज्ञा दी थी कि जो सबसे अच्छी सलाह मैं कैदी को दे सकूँ, वह दूँ। मैंने उससे पूछा कि तुमने चोरी किया है, उसने कहा—'हाँ, अवश्य मैंने चोरी किया है।' इस पर मैंने सर्वोत्तम सलाह उसे यह दी कि वह दरवाजा खोल कर भाग जाय। उसने मेरी सलाह ली और चलता बना।"

२०३

सेठ जी ने कहा—हमें तो ऐसा नौकर चाहिए, जो कमखर्च हो।

नौकर ने बनावटी हँसी हँस कर कहा—सरकार, इसी कमखर्च होने की वजह से तो मुझे मेरे मालिक ने निकाल दिया है।

"क्यों? किसलिए?"—सेठ जी ने पूछा।

नौकर ने कहा—सरकार! मैं फटने और गन्दे

डर से अपने कपडे तो नहीं पहनता था, मालिक के ही कपडे पहना करता था।"

३०४

एक जहाज जापान से फ्रान्स को जा रहा था। रास्ते में जहाज के पेंदे में सूराख हो गया और उसमें पानी भरने लगा। यह देख कर जहाज का कप्तान बडा घबराया और जहाज पर बैठे हुए लोगों से पूछने लगा—तुम लोगों में से कोई प्रार्थना करना भी जानता है?

उनमें से एक ने झट उत्तर दिया—हाँ, मैं जानता हूँ।

कप्तान ने खुश होकर कहा—अच्छा आप सब से आगे जाइए और प्रार्थना कीजिए और बाकी हम लोग प्राण रक्षक बोट पर बैठ कर अपनी जान बचाएँगे।

३०५

एक बाबू साहब बाजार से घी खरीद कर नौकर के सर पर रखाए हुए आ रहे थे। रास्ते में घी का बडा नौकर के सर पर से गिर पडा। पीछे से जोर की आवाज सुन कर बाबू साहब चौंक पडे और देखते क्या हैं कि घी बह कर नाली में भरा जा रहा है।

बाबू साहब नौकर पर बेतरह बिगड पडे और बोले—यह कैसे और क्यों गिराया?

नौकर ने धीमी आवाज से उत्तर दिया—बाबू जी,

मेरे दिमाग और पुट्ठे में यह झगड़ा हो रहा था कि दोनों में कौन श्रेष्ठ है। पुट्ठा कह रहा था कि मैं तुमसे ज्यादा ताकतवर हूँ और बहुत दूर घड़े को ले जा सकता हूँ और दिमाग कहता था कि मैं ज्यादा दूर ले जा सकता हूँ। बस इसी झगड़े में सर ने चिढ़ कर घड़े को गिरा दिया।

२०६

कमला बड़ी जोर से रोती हुई आकर माँ से कहने लगी—माँ, मेरी गुड़िया का पैर टूट गया।

माँ ने पूछा—क्यों बेटी! क्या हुआ, कैसे तेरी गुड्डी का पैर टूट गया?

कमला ने सिसकते हुए उत्तर दिया—बाग में मैं और बसन्त दोनों खेल रहे थे, मैंने इस गुड्डी से बसन्त के सर पर मार दिया और इसका पैर टूट गया!

२०७

कैलाश ने यमुना नदी में डूबते हुए एक बुड्ढे को बड़ी होशियारी से तैर कर बचा लिया। जब बुड्ढे को होश हुआ तो उसने कहा—तुमने मेरी जान बचाई है, इसके बदले में तुमसे अपनी माधुरी को ब्याह दूँगा।

कैलाश ने माधुरी की तरफ देख कर बुड्ढे को पकड़ कर उठा लिया। इस पर बुड्ढे ने घबरा कर कहा—अरे भई! यह क्या कर रहे हो?

कैलाश ने कहा—"मैं तुम्हें फिर जमुना में डाल दूँगा।"
माधुरी वास्तव में बहुत बदसूरत थी।

३०८

मोटर का गहरा धक्का लगने के कारण एक बेचारा बटोही मुँह की खाकर गिर पड़ा। बटोही को गिरा हुआ देख कर, एक सज्जन ने सहानुभूति दिखलाते हुए कहा—क्या डॉक्टर को बुलाऊँ?

बटोही ने कराहते हुए कहा—भैया, इस मोटर में डॉक्टर साहब ही तो थे, अब दूसरे को बुला कर मैं अपनी जान से हाथ धोना नहीं चाहता।

३०९

घड़ी चुराने के अपराध में एक मनुष्य गिरफ़्तार कर जज के पास लाया गया। जज को विश्वास नहीं हुआ कि उसने घड़ी चुराई है। उसने कैदी से कहा—जाओ, तुम छोड़ दिए गए।

कैदी ने ताज्जुब में आकर कहा—क्या? मैं छोड़ दिया गया!

जज ने कहा—हाँ, जाओ तुम रिहा कर दिए गए।

कैदी—सरकार, अब घड़ी तो वापस न करना होगा?

३१०

कमल ने विमल से पूछा—क्यों भाई, तुम अपना दूसरा विवाह क्यों नहीं कर लेते?

विमल—इसके चार कारण हैं।

कमल—वह क्या ?

विमल—तीन लडकियाँ और एक लडका।

३११

दो व्यक्ति आपस में बेतरह झगड रहे थे।

पहिला—मैं कहता हूँ सूरज, चाँद से अधिक रोशनी करता है।

एक तीसरे सज्जन ने बीच बचाया करते हुए कहा—तो भाई इसमें आश्चर्य की कौन सी बात है ? सूरज चमकता भी तो दिन में है। रात में चमके तो हम भी देखें कितनी रोशनी करता है ?

३१२

एक मोटे ताजे सज्जन चन्दा माँगने के लिए व्याख्यान दे रहे थे। बोलते बोलते पेट पर हाथ फेरने लगे। किसी मसखरे ने ऊँचे स्वर से कहा—क्यों महाराज ! क्या इसी विभाग की उन्नति के लिए आप गला फाड रहे हैं ?

३१३

राह चलते हुए एक व्यक्ति ने डाकिए से उत्सुक होकर पूछा—भाई, मेरा भी कोई खत है क्या ?

डाकिया—आपका नाम ?

"खत पर लिखा ही होगा, फिर पूछते क्यों हो ?"

३१४

एके बिगडे हुए रईस जाडे की रात में बारह बजे अपने सजे-सजाए कमरे में बैठे बाजा बजा रहे थे। आवाज आई—'मलाई की बरफ।'

रईस महोदय ने चार आने की बरफ ली और खाते-खाते बरफ वाले से उन्होंने पूछा—क्यों बे, इस जाडे में तेरी बरफ कौन उल्लू का पट्ठा खाता होगा?

बरफ वाले ने धीरे से कहा—सरकार जैसन शौकीन लोग खात हैं और भला कौन खाई।

३१५

लन्दन के एक विख्यात बैरिस्टर एक मुकदमे की पैरवी बडी दिलचस्पी के साथ कर रहे थे, मुकदमा तीन महीने तक जारी था। एक दिन उनका मुन्शी कानून की करीब सौ पुस्तकें लेकर, जिनकी उस दिन की पैरवी के लिए जरूरत थी, अदालत में पहुँचा। आगे आगे बैरिस्टर साहब चल रहे थे और पीछे-पीछे मुन्शी। बैरिस्टर साहब के टेबुल पर पुस्तकों का ढेर देख कर न्यायाधीश ने पूछा—महाशय, आप एक गदहे का बोझ क्यों लाए हैं?

बैरिस्टर साहब ने मुस्करा कर जवाब दिया—"दूसरे गदहे को कानून सिखलाने को।" न्यायाधीश ने सर नीचा लिया।

३१६

जर्मनी के एक प्रोफेसर अपने विषय के अध्ययन में इतने दत्तचित्त रहते थे कि उन्हें उनकी पत्नी कपडे पह-नाया करती थी। एक दिन सुबह धोबी कपडे धोकर लाया, जिन्हें प्रोफेसर साहब के नौकर ने उस कमरे में लाकर रख दिया, जिसमें प्रोफेसर साहब पढ़ रहे थे। पढ़ना समाप्त कर चुकने पर जब उनकी दृष्टि घडी पर पडी तो देखा कि कॉलेज जाने का समय हो चुका है। जल्दी जल्दी में उन्होंने धुले हुए कपडों में से पहनने के कपडे निकाले और उन्हें पहिन कर वे कॉलेज चले गए। कुछ देर के बाद उनकी पत्नी उस कमरे में गई, जहाँ प्रोफे-सर साहब रोज अपने कपड़े पहनते थे, और देखा कि प्रोफेसर साहब के कॉलेज के कपडे खूँटियों पर टँगे थे। शङ्का हुई कि कहीं वे बिना कपडे पहने ही कॉलेज न चले गए हों। झट उन्होंने प्रिन्सिपल को टेलीफोन किया—महाशय, कृपा करके बतलाइए कि फलाँ प्रोफेसर साहब कॉलेज कपडे पहिन कर आए हैं या नहीं?

उत्तर मिला—वह कपडे पहने हुए हैं।

३१७

एक लेखक ने विरहावस्था के ७ प्रकार बतलाए हैं। पहला प्रकार पत्नी की मृत्यु के कारण उपस्थित होता है।

इस विरह को "चिर-विरह" कहते हैं। घर ही में पत्नी की बीमारी के कारण जो विरह उत्पन्न होता है, उसे "प्रत्यक्ष विरह" कहते हैं। पत्नी जब मायके चली जाती है, उस विरह को "परोक्ष विरह" कहते हैं। घर में पत्नी से झगडा हो जाने के कारण जो विरह उत्पन्न होता है, उसे "प्रेम-विरह" कहते हैं। एक क्षण के लिए भी पत्नी दृष्टि से हट जाने पर जो विरह भोगना पडता है, उसे "क्षणिक विरह" कहते हैं, और विवाह के लिए तरसने वाले युवकों और युवतियों को जो विरह भोगना पड़ता है, उसे "प्रारम्भ विरह" कहते हैं।

२१८

एक राजनीतिज्ञ, जोकि घर-घर घूम कर वोट माँग रहे थे, अचानक एक खेतिहर के मकान पर पहुँचे, जहाँ उन्होंने फाटक पर ही एक युवती को खडी हुई पाया। प्रार्थी ने बडी नम्रता से नमस्कार करने के बाद रमणी से पूछा—निश्चय ही आपके स्वामी घर में विराजमान हैं ?

रमणी ने उत्तर में कहा—"जी हाँ, वह घर में है।" फिर स्त्री से आपने पूछा—"क्या मैं उनसे मिल सकता हूँ ?" स्त्री ने कहा—'मेरे स्वामी इस समय खेत में कुत्ते दफन करने गए हैं।"

उन्होंने कहा—"मुझे आपके कुत्ते की मृत्यु सुन कर बड़ा शोक हुआ, उसे किसने मारा ?" स्त्री ने मुँह बना कर कहा कि कुत्ते ने स्वयं अपने को उम्मेदवारों (जो चुनाव के लिए खड़े हुए हैं) की ओर भूँक-भूँक कर मार डाला।

३१९

लन्दन की किसी कचहरी में एक गवाह से पूछा गया—तुम अपने को विधवा बतलाती हो, क्या यह सत्य है ?

गवाह ने उत्तर दिया—जी हाँ, मैं तीन पतियों को दफन कर चुकी हूँ, इसलिए मैं विधवा कहलाने का अधिकार अवश्य रखती हूँ।

३२०

बँगला के सुयोग्य लेखक एक बार पटने से कलकत्ता जा रहे थे। जिस डिब्बे में वह बैठे थे, उसी में कॉलेज के एक विद्यार्थी महोदय बैठे थे, जो बँगला-साहित्य की बड़ी निन्दा कर रहे थे। दस मिनट तक तो लेखक महोदय शान्ति के साथ सुनते रहे, परन्तु दस मिनट के बाद उन्होंने विद्यार्थी जी से पूछा कि आपने बँगला की कौन-कौन सी पुस्तकें पढ़ी हैं ?

विद्यार्थी—आज तक मैंने बँगला भाषा की हजारों पुस्तकें पढ़ डाली होंगी।

लेखक—हाल ही में कौन-कौन सी पढ़ी हैं ?

विद्यार्थी—पुस्तक का नाम तो भूल गया।

लेखक—क्या उस पुस्तक के लेखक का नाम बतला सकते हैं।

विद्यार्थी—जी नहीं, लेखक का नाम भी नहीं मालूम।

लेखक—क्या आप यह बतला सकते हैं कि उस पुस्तक में क्या लिखा था ?

विद्यार्थी—यह भी भूल गया, परन्तु हाँ, यह अवश्य बतला सकता हूँ कि उस पुस्तक की जिल्द लाल रङ्ग की थी।

३२१

न्यायाधीश ने अभियुक्त से पूछा कि तुम कब पैदा हुए थे ? अभियुक्त ने कोई उत्तर न दिया। चिढ कर न्यायाधीश ने फिर कहा—अपना जन्म दिवस बतलाओ !

अभियुक्त ने धीमे स्वर में कहा—मेरे जन्म-दिवस के उपलक्ष में आप कुछ मिठाई तो बाँटिएगा ही नहीं, फिर जन्म-दिवस पूछ कर क्या कीजिएगा हुजूर !

३२२

एक किसान की पत्नी उसे बहुत गालियाँ दिया करती एक दिन जब कि पानी बरस रहा था, किसान खेत परन्तु पत्नी के डर से घर में घुसने की उसकी

हिम्मत न हुई। इसलिए वह पानी में भीगता हुआ सडक पर ही खडा रहा। थोडी देर में उसका एक मित्र वहाँ से निकला। मित्र ने किसान से कहा कि जब वर्षा इतने ज़ोर की हो रही है तो तुम घर के अन्दर क्यों नहीं चले जाते?

किसान ने उत्तर दिया कि इस वर्षा से जान बच सकती है, परन्तु घर के अन्दर जो गालियों की वर्षा होती है, [illegible] बचाना मेरे लिए बडा मुश्किल होगा।

३२३

लेखक—हाल ही में कौन-कौन सी पढ़ी हैं?

विद्यार्थी—पुस्तक का नाम तो भूल गया।

लेखक—क्या उस पुस्तक के लेखक का नाम बतला सकते हैं।

विद्यार्थी—जी नहीं, लेखक का नाम भी नहीं मालूम।

लेखक—क्या आप यह बतला सकते हैं कि उस पुस्तक में क्या लिखा था?

विद्यार्थी—यह भी भूल गया, परन्तु हाँ, यह अवश्य बतला सकता हूँ कि उस पुस्तक की जिल्द लाल रङ्ग की थी।

३२१

न्यायाधीश ने अभियुक्त से पूछा कि तुम कब पैदा हुए थे? अभियुक्त ने कोई उत्तर न दिया। चिढ़ कर न्यायाधीश ने फिर कहा—अपना जन्म दिवस बतलाओ।

अभियुक्त ने धीमे स्वर में कहा—मेरे जन्म-दिवस के उपलक्ष में आप कुछ मिठाई तो बाँटियेगा ही नहीं, फिर जन्म-दिवस पूछ कर क्या कीजिएगा हुजूर!

३२२

एक किसान की पत्नी उसे बहुत गालियाँ दिया करती थी। एक दिन जब कि पानी बरस रहा था, किसान खेत से लौटा, परन्तु पत्नी के डर से घर में घुसने की उसकी

हिम्मत न हुई। इसलिए वह पानी में भीगता हुआ सड़क पर ही खड़ा रहा। थोड़ी देर में उसका एक मित्र वहाँ से निकला। मित्र ने किसान से कहा कि जब वर्षा इतने ज़ोर की हो रही है तो तुम घर के अन्दर क्यों नहीं चले जाते?

किसान ने उत्तर दिया कि इस वर्षा से जान बच सकती है, परन्तु घर के अन्दर जो गालियों की वर्षा होती है, उससे जान बचाना मेरे लिए बड़ा मुश्किल होगा।

३२३

एक ग्रामीण पाठशाला का एक शिक्षक बड़ा निर्दयी था। विद्यार्थियों को बुरी तरह मारा करता था। एक दिन इस स्कूल को देखने कलक्टर पहुँचे। कलक्टर ने विद्यार्थियों से कई प्रश्न पूछे। उन्होंने एक विद्यार्थी से, जिसे एक दिन पहले उस शिक्षक ने बहुत मारा था, पूछा—"दुनिया, सूर्य, चन्द्र और तारे किसने बनाए?" विद्यार्थी घबरा गया, वह समझा कि कलक्टर साहब कल की घटना का हाल पूछ रहे हैं, जिसके कारण उसे मार पड़ी थी।

विद्यार्थी ने घबराते हुए उत्तर दिया—हुजूर, मुझसे गलती हो गई अब ऐसी ग़लती फिर न करूँगा।

३२४

एक सम्पादक महाशय इत्तिफाक से बिना टिकट गाड़ी में सफर कर रहे थे और यह इरादा कर लिया था

कि सम्पादन-कला की आजमाइश यहाँ भी करूँगा। यह बात सम्पादक महाशय सोच भी न पाए थे कि टिकट-कलक्टर आ धमका और उसने कहा—"साहब! टिकट दिखलाइए।" सम्पादक महाशय ने बड़े इतमीनान से जवाब दिया—"साहब! टिकट मेरी 'पॉकेट-बुक' में था, लेकिन वह तो मकान पर ही छूट गई। मगर याद रखिए, मैं "डेली न्यूज" के सम्पादकीय विभाग में काम करता हूँ।"

इस पर टिकट-कलक्टर ने कहा—"अच्छा, मेरे साथ आइए। इस बगल वाले डब्बे में "डेली न्यूज" के सम्पादक महोदय भी विराजमान हैं, वह आपकी शनाख्त कर देंगे। सम्पादक महाशय बेचारे टिकट-कलक्टर के पीछे हो लिए। क्या करते, दूसरा चारा ही न था। उस डब्बे में पहुँचते ही सम्पादक जी यह सुन कर बड़े चकित हुए कि उस मनुष्य ने इन्हें देखते ही कह दिया—हाँ, ठीक तो है! यह तो हमारे सम्पादकीय विभाग में काम करते हैं।

जब टिकट-कलक्टर चला गया, तब बेचारे सम्पादक उस मनुष्य के पास जाकर इस सफाई से बचाने पर धन्यवाद देने लगे। उस व्यक्ति ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया—ओह! धन्यवाद-वन्यवाद की क्या जरूरत? अजी जनाब! मैं भी "डेली न्यूज" का सम्पादक-वम्पादक कुछ नहीं हूँ।

३२५

सुशीला ने कहा—"अरी, बहिन माधवी! मेरी सीने वाली नई मशीन को न जाने क्या हो गया है, वह तो चलती ही नहीं।" माधवी ने गौर से देख कर कहा—"आखिर, उसमें क्या बिगड़ा हुआ है?"

बड़ी परेशान होते हुए सुशीला बोली—बिगड़ा-उगड़ा तो कुछ मालूम नहीं देता, लेकिन जब मैंने बटन के ऊपर उसे चलाया, तो उसके पुरजे टूट गए।

३२६

पण्डित रमाशङ्कर पाण्डे की स्त्री रामकली अपने छोटे लड़के लल्लन को थपक-थपक कर सुला रही थी। जब लल्लन ऊँघ गया तो रामकली कहती है—अरे, ओ लल्लन! आज तुमने ईश्वर-वन्दना की कि नहीं?

लल्लन ने चौंक कर कहा—हाँ, अम्माँ। कर चुका। और फिर सोने लगा।

इतने में रामकली फिर पूछने लगी—भगवान् से यह विनती की कि नहीं—'कि मुझे एक अच्छा लड़का बना दो।'

लड़के ने जवाब दिया—हाँ अम्माँ! मैंने अपने को नेक बनाने की प्रार्थना करते हुए परमात्मा से यह भी मनौती मानी कि 'मेरी अम्माँ और बाबू को भी सुधार दो भगवन्!'

३२७

अर्थ-शास्त्र के एक प्रोफ़ेसर साहब एक सभा में व्याख्यान दे रहे थे। मनुष्य गणना के सम्बन्ध में उन्होंने कहा कि अमुक प्रदेश में स्त्रियों की संख्या बहुत ही कम होती जा रही है। बहुत से मनुष्य कुँवारे ही रह जाते हैं, स्त्रियों की बहुत माँग है। (अपने सामने बैठी हुई स्त्रियों से) यदि आप चाहें तो उस देश में जा सकती हैं। एक स्त्री को यह सुन कर बड़ा क्रोध आया और उसको असभ्य समझ कर, सभा को छोड़ कर जाने लगी।

प्रोफेसर साहब बोले—श्रीमती जी, मेरा अभिप्राय यह नहीं था कि आप इतनी शीघ्र वहाँ पहुँचने की तैयारी कर दें और मेरा व्याख्यान भी न सुनें।

३२८

एक अध्यापक ने पाठशाला में शिक्षा देते हुए एक विद्यार्थी से पूछा—क्या तुमने शिवाजी का नाम सुना है?

छात्र—जी हाँ।

अध्यापक—अच्छा, यह बतलाओ कि यदि वे आज जीवित होते तो क्या करते?

छात्र—(कुछ समय तक सोचने के पश्चात्) उनको वृद्धावस्था के कारण पेन्शन मिलती होती।

३२९

एक पुरुष बाजार में एक उल्लू और एक उल्लू का

बच्चा लिए हुए बैठा था। वह उनको बेचना चाहता था। एक मनुष्य ने पूछा—क्यों भाई, इनका क्या मूल्य है?

"उल्लू का आठ आने और बच्चे का बारह आने।"

"वाह! विचित्र बुद्धि है। अरे बड़े का मूल्य अधिक होना है कि छोटे का?"

"सरकार, आप ही सोच लें। बड़ा केवल उल्लू ही है, दूसरा उल्लू भी और उल्लू का बच्चा भी।"

३३०

एक मनुष्य ने दो बढ़इयों को आरे से एक लट्ठा चीरते हुए देखा। यह उसके लिए पहला अवसर था, जब कि उसने देखा कि कभी आरे को एक अपनी ओर को खींच लेता है कभी दूसरा। उन बढ़इयों में एक बहुत लम्बा था, दूसरा नाटा। यह मनुष्य प द्रह मिनट तक बड़े ध्यानपूर्वक सोचता रहा। फिर आगे बढ़ कर उसने लम्बे मनुष्य के मुँह पर एक चपत लगाया।

बढ़ा मनुष्य—हैं-हैं, यह क्या?

यह मनुष्य—डरपोक, कायर! मैं पन्द्रह मिनट से देख रहा हूँ कि तुम इस छोटे मनुष्य से आरा छीनने की कोशिश कर रहे हो। परन्तु यह भी बलवान् है। क्या तुम्हें इसके साथ बल दिखलाने में लज्जा नहीं आती?

३३१

एक महाशय एक हलवाई की दुकान से होकर आ-

रहे थे। वहाँ कुछ छोटे लड़के मिठाई मोल ले रहे थे। उन्होंने एक बच्चे से पूछा—यदि मैं इस दूकान में से मिठाई लेकर निकलता तो तुम मुझे देख कर क्या कहते?

बच्चा कुछ देर तक ध्यानपूर्वक सोचता रहा, फिर बड़े भोलेपन के साथ उसने उत्तर दिया—थोड़ी हमको भी दे दो।

३३२

एक रोगी डॉक्टर साहब को अपनी आँख दिखलाने लगा और कहा—मेरी आँख में तकलीफ है।

डॉक्टर—हाँ, मैं तुम्हारी आँख से भीतर का सब रोग देख सकता हूँ। तुम्हारे पेट में दर्द रहता है, सिर भी घूमता है, जुकाम भी रहता है और आँख में तो तकलीफ है ही।

रोगी—क्षमा कीजिए, तकलीफ दूसरी आँख में है। यह आँख तो शीशे की बनी हुई है।

डॉक्टर साहब को यह सुन कर अपनी भूल मालूम हुई। वे बनी हुई आँख देख रहे थे, परन्तु थे बुद्धिमान्; वे तुरन्त बोले—भाई, शीशे की आँख है तभी तो शरीर के भीतर के सब रोग दिखलाई पड़ रहे हैं।

३३३

रियासत बड़ोदा में प्राथमिक शिक्षा अनिवार्य है।

एक बार एक किसान के विषय में शिकायत की गई कि वह अपने लड़के को पढ़ने के लिए नहीं भेजता और जो अध्यापक लड़के को बुलाने के लिए गया था, उसको उसने मारा।

किसान पुलिस में बुलाया गया और इसका उत्तर माँगा गया। वह बोला—श्रीमान्, प्रथम तो मैं यह कहना चाहता हूँ कि मेरे घर पर कोई अध्यापक नहीं गया। दूसरी बात यह है कि यदि कोई गया भी है तो मैंने उसे कभी नहीं मारा और अन्त में मैं यह कहूँगा कि यदि उपरोक्त दोनों बातों में आप मेरा विश्वास न करें तो यह तो आपको मानना ही पड़ेगा कि मेरे कोई लड़का भी नहीं है।

३३४

एक बेवकूफ का एक पैसा गुम हो गया। वह हाथ जोड़ कर परमात्मा से प्रार्थना करने लगा कि यदि मेरा खोया हुआ पैसा मिल जाय तो मैं एक नारियल आपको चढ़ाऊँगा।

३३५

सेठ जी—(एक ग्रामीण किसान से) कल जब म्यूनिसिपेलिटी में मेम्बरों का चुनाव होगा, तब तुम मुझे वोट (Vote) देना।

किसान—(वोट का अर्थ नाव समझ कर) यार सेठ जी, यदि मेरे पास बोट होता तो मैं अपना माल रेलगाड़ी में भर कर क्यों ले जाता?

३३६

वकील साहब अदालत में बैठे हुए थे। इतने में उनका नौकर आया और कहने लगा—यदि आप कुछ पुरस्कार दें तो मैं आपको एक शुभ-समाचार सुनाऊँ।

वकील—(पुरस्कार में एक रुपया देते हुए) जल्दी सुनाओ, क्या समाचार है ?

नौकर—आपके मकान में आग लग गई।

वकील—(नौकर पर दाँत पीसते हुए) क्यों रे हराम जादा ! यही शुभ-समाचार है ?

नौकर—हुज़ूर आप उस मकान को तोड़ कर नया बनवाना चाहते थे। तुड़वाने में व्यर्थ पैसे खर्च होते। वह स्वयं टूट गया। कहिए, इससे आपकी बचत हुई या नहीं ?

३३७

एक व्यापारी के यहाँ बहुत से मुनीम रहा करते थे। उनमें से एक मुनीम की यह आदत थी कि वह विलम्ब करके दूकान पर आया करता था। व्यापारी सदैव उसे इस बुरी आदत को छोड़ देने के लिए उपदेश दिया करता था। किन्तु जब-जब व्यापारी उसे इस विषय पर कहता, तब-तब वह धूर्त उत्तर देता—सेठ जी, इसमें मेरा तनिक भी अपराध नहीं है। सारा अपराध मेरी घड़ी का है, जो ठीक टाइम नहीं देती।

इसी प्रकार कई दिन बीत गए। एक दिन जब वह
...ी स आया, तब व्यापारी ने उससे कहा—चल तुम्हें
...यवा मुझे एक नई वस्तु लेनी पड़ेगी।

मुनीम ने उत्सुकतापूर्वक पूछा—कौन सी वस्तु?

व्यापारी—या तो तुम दूसरी घड़ी खरीदो या मैं दूसरा मुनीम रक्खूँ।

३३८

एक मास्टर किसी विद्यार्थी को बहुत देर से पाठ पढ़ा रहा था, परन्तु उसकी समझ में नहीं आता था। इस पर मास्टर साहब झुँझला कर बोले—अरे तुझे किस गधे ने पढ़ाया है?

विद्यार्थी—आप ही ने तो पढ़ाया है, मास्टर साहब।

३३९

बाबू रजनीकान्त की छत पर से बन्दर धोती लेकर भागा। बाबू साहब ने घबरा कर नौकर से पुकार कर कहा—"अरे कलुआ, धोती बन्दर ले गया, जल्दी छुड़ा।" "अजी सरकार, वह क्या खरीदने जाता। बेचारा नङ्गा फिर रहा था, पहन लेने दो।"

३४०

एक बाग में दो आलसी लेट रहे थे, उनमें से एक की छाती पर पका आम पड़ा था। उधर से एक मुसाफ़िर

रहा था। उनमें से आम वाले ने कहा—"ज़रा मेरे मुँह में आम निचोड़ दो।" पथिक ने कहा—"तुम बड़े आलसी हो।" इतना सुनते ही दूसरा बोल उठा—"हाँ सरकार, यह बड़ा आलसी है, रात भर मेरे मुँह को कुत्ता चाटता रहा और इसने 'दुत्त' तक भी नहीं किया।"

३४१

कमलाशङ्कर को गाली देने की बहुत आदत थी। एक बार कमलाशङ्कर एक बड़ी पञ्चायत के पञ्च चुने गए। लोगों ने कहा—सरकार, अब किसी को गाली न देना।

वह बोले—अच्छा अब किसी साले को गाली न देंगे।

३४२

दो मुसाफिर नाव में सफ़र कर रहे थे। एकाएक नदी में तूफान आया। एक ने कहा—यार कहीं डूब न जाय।

दूसरे ने कहा—डूब भी जाने दे, साले ने किराया भी बहुत बढ़ा रक्खा है।

३४३

घर के पास ही तालाब था। माता नहीं चाहती थी कि छोकरा पानी के पास जाय। माता ने कह रक्खा था कि अगर वह तालाब के पास जायगा तो उसे मार खा[illegible]

[illegible]। एक दिन जब छोकरा खेल-कूद कर घर में

तब उसके कपड़े भीगे हुए थे। माता को यह बुरा मालूम हुआ। वह बहुत क्रोधित हुई।

माता—रामू! तुम्हारे कपड़े कैसे भीगे हुए हैं? क्या तुम फिर पानी के अन्दर गए थे?

रामू—हाँ माँ, श्यामा को बचाने के लिए पानी में गया था।

श्यामा रामू की छोटी बहिन थी। माता अपने पुत्र की वीरता से बहुत प्रसन्न हुई। बड़े प्रेम और आनन्द से उसे हृदय से लगा कर माता ने कहा—चिरायु हो मेरे प्यारे! क्या जैसे ही श्यामा गिरी, वैसे ही तुम उसके पीछे पानी में कूद पड़े थे?

रामू—नहीं माँ, मैं तो पहले ही से कूद पड़ा था [illegible] वह गिरे तो मैं शीघ्र ही बचा लूँ।

रहा था। उनमें से आम वाले ने कहा—"जरा मेरे मुँह में आम निचोड दो।" पथिक ने कहा—"तुम बडे आलसी हो।" इतना सुनते ही दूसरा बोल उठा—"हाँ सरकार, यह बडा आलसी है, रात भर मेरे मुँह को कुत्ता चाटता रहा और इसने 'दुत्त' तक भी नहीं किया।"

३४१

कमलाशङ्कर को गाली देने की बहुत आदत थी। एक बार कमलाशङ्कर एक बडी पञ्चायत के पञ्च चुने गए। लोगों ने कहा—सरकार, अब किसी को गाली न देना।

वह बोले—अच्छा अब किसी साले को गाली न देंगे।

३४२

दो मुसाफिर नाव में सफर कर रहे थे। एकाएक नदी में तूफान आया। एक ने कहा—यार कहीं डूब न जाय।

दूसरे ने कहा—डूब भी जाने दे, साले ने किराया भी बहुत बढा रक्खा है।

३४३

घर के पास ही तालाब था। माता नहीं चाहती थी कि छोकरा पानी के पास जाय। माता ने कह रक्खा था कि अगर वह तालाब के पास जायगा तो उसे मार खानी पडेगी। एक दिन जब छोकरा खेल-कूद कर घर में आया,

तब उसके कपड़े भीगे हुए थे। माता को यह बुरा मालूम हुआ। वह बहुत क्रोधित हुई।

माता—रामू! तुम्हारे कपड़े कैसे भीगे हुए हैं? क्या तुम फिर पानी के अन्दर गए थे?

रामू—हाँ माँ, श्यामा को बचाने के लिए पानी में गया था।

श्यामा रामू की छोटी बहिन थी। माता अपने पुत्र की वीरता से बहुत प्रसन्न हुई। बड़े प्रेम और आनन्द से उसे हृदय से लगा कर माता ने कहा—चिरायु हो मेरे प्यारे! क्या जैसे ही श्यामा गिरी, वैसे ही तुम उसके पीछे पानी में कूद पड़े थे?

रामू—नहीं माँ, मैं तो पहले ही से कूद पड़ा था जिससे यदि वह गिरे तो मैं शीघ्र ही बचा लूँ।

३४४

श्यामाचरण ने अपने मित्र कविराज जीवनदास से एक दिन पूछा—कविराज जी! आपने कभी अपने जीवन में कोई भयङ्कर भूल भी की है?

कविराज—हाँ, केवल एक बार, मैंने एक लखपती को तीन ही दिन में आराम कर दिया!

३४५

एक अङ्गरेज कर्नल के खानसामा का नाम था मुजीमुज्जमा खाँ। साहब लिए इस लम्बे और कठिन

नाम का उच्चारण करना एक बार ही असम्भव था। उन्होंने बहुत-कुछ चाहा कि खानसामा अपने उस नाम को बदल कर कोई सीधा सादा नाम रख ले, पर खानसामा राजी ही नहीं होता था। अन्त में साहब बहादुर के हृदय में एक दिन नया विचार उठा—वे खानसामा को एक तालाब के पास ले गए। उन्होंने खानसामा को पकड़ कर उसे दो-तीन गोते लगाए। उसके उपरान्त उसे बाहर निकाल कर साहब बहादुर कहने लगे—खानसामा! आज से तुम्हारा नाम हुआ जैक (Jack), अब तुम शुक्रवार के दिन मांस मत खाना।

खानसामा भला क्यों मानने लगा। दूसरे ही शुक्रवार को आपने मांस का एक बड़ा टुकड़ा लेकर खाना आरम्भ कर दिया। साहब ने जो देखा तो बहुत झुँझलाए, कहने लगे—क्यों जैक! यह क्या? तुम फिर शुक्रवार के दिन मांस खाने लगे?

खानसामा—नहीं हुजूर! यह मांस नहीं है। मैंने इसे तालाब में डुबो लिया था। यह तो अब खरबूजा हो गया।

३४६

पिता—लालू! तुम्हें मारना मुझे अच्छा थोड़े ही लगता है। बेटा, मैं तुमसे अत्यन्त स्नेह करता हूँ और तेरे सुधारने ही के लिए मैं तुझे कभी-कभी मारता हूँ।

पुत्र—(रोते हुए) बाबू जी ! सो तो ठीक है , पर मैं अभी छोटा हूँ, नहीं तो अवश्य आपके स्नेह का बदला चुका देता।

३४७

कप्तान साहब सिपाहियों के सामान का निरीक्षण कर रहे थे। अङ्गरेज सिपाहियों को दाँत साफ करने के लिए ब्रश दिया जाता है, पर जैक नामक सिपाही के सामान में कप्तान को वह ब्रश नहीं दिखाई पडा। कप्तान ने पूछा—तुम्हारा दाँत साफ करने वाला ब्रश कहाँ है ?

जैक—"यह है हुजर !" यह कह कर जैक ने धातु की चीजें साफ करने वाला बडा ब्रश दिखाया। कप्तान उसे देख कर बहुत ही नाराज हुआ, उसने समझा कि जैक मुझसे दिल्लगी करता है। उसने डाँट कर कहा—"क्यों जी ! इतना बडा ब्रश तुम अपने मुख में कैसे डाल लेते होगे !"

जैक ने बडे शान्त भाव से उत्तर दिया—नहीं हुजूर, मैं अपने दाँत ही बाहर निकाल कर साफ कर लिया करता हूँ।

३४८

सुशीला की माता ने कष्ट होकर सुशीला से कहा—मैं तुझे मारते-मारते थक गई, लेकिन तू कुछ सुनती ही नहीं। अब मैं तुझे तेरे पिता के सुपुर्द करती हूँ !

सुशीला ने बड़े भोलेपन से कहा—माता जी, जब पिता जी थक जाएँगे तब ?

३४९

एक रोगी वैद्य के पास गया। वैद्य ने पूछा—कैसी हालत है ?

रोगी—ज्वर तो टूट गया, लेकिन कमर बड़ा दर्द करती है ?

वैद्य—घबड़ाओ नहीं, कमर भी टूट जायगी।

३५०

डॉक्टर—कहो अब क्या हाल है ?

रोगी—मङ्गलवार को ज्वर आया था, बुद्धवार को फिर नहीं आया और आज फिर आ गया है।

डॉक्टर ने एक गोली देकर उसे सेवन करने की रीति बतला दी।

रोगी—डॉक्टर साहब ! यह तो बतलाइए कि मुझे कौन सा ज्वर है ?

डॉक्टर—तुम्हें पारी का ज्वर है और यह गोली खाने से ठीक हो जायगा।

रोगी—ऊँह ! पारी का ज्वर तो तब हो कि आज मुझे आया कल आपको और परसों आपके बच्चे को ! लेकिन यह तो मुझे ही आता है।

३५१

श्रीमती जी कहीं निमन्त्रण में गई थीं। चलते समय आपने दरवाजे में ताला लगा दिया, और चाबी दरवाजे के ऊपर वाले ताक में रख दी। जब पतिदेव सायङ्काल को ऑफिस से पधारे, तब आपने देखा कि दरवाज़ा बन्द है, और उसमें ताला पड़ा हुआ है। पहले तो बहुत घबराए, खैर, किसी प्रकार ताला तोड़ कर भीतर गए। कमरे में पहुँच कर जब आप कपड़े उतारने लगे, तब आपकी दृष्टि मेज पर रक्खे हुए एक कागज पर पड़ी। आप उठा कर पढ़ने लगे। कागज में लिखा हुआ था—मेरी सहेली श्यामा के यहाँ मेरा निमन्त्रण है, मैं वहाँ जा रही हूँ। रात को १० बजे तक आ जाऊँगी। बाहर के दरवाजे की ताली वहीं ऊपर के ताक में रक्खी है। आप लेकर दरवाजा खोल लीजियेगा।

श्रीमती जी ने अपनी शिक्षा का जितना प्रयोग किया, उतना अपनी बुद्धि का नहीं !!

३५२

एक देवता जी होटल से खाना खाकर बिना बिल चुकाए चम्पत हो जाया करते थे। एक दिन ज्योंही आप दरवाजे तक पहुँचे कि पीछे से मेनेजर ने आपको पकड़ लिया और कहा—बहुत दिनों में हाथ लगे हो। यह पाँचवीं बार है, जब तुमने होटल को धोखा दिया है।

कुछ क्रोधित होकर देवता जी बोले—तुम भूलते हो !

मैनेजर ने कहा—क्या मैं भूल रहा हूँ ?

देवता जी—भूल नहीं रहे हो तो क्या ? मुझे अच्छी तरह याद है कि यह सातवीं बार है।

३५३

श्रीमती मॉर्टिन ने एक दिन बड़े स्नेह के साथ मुस्कराते हुए अपने पति से कहा—प्यारे ! जब मेरा देहान्त हो जाय, तब तुम मेरी समाधि (कब्र) पर यह वाक्य अङ्कित करा देना—'स्वर्ग में शान्ति का निवास है।'

पतिदेव ने स्नेहमयी वाणी में उत्तर दिया—मेरी समझ में तो यह वाक्य अङ्कित करना उचित होगा—'स्वर्ग में कभी शान्ति का निवास था।'

३५४

किसान—कहिए डॉक्टर साहब ! आजकल क्या हाल चाल है ?

डॉक्टर—बिलकुल खराब ! इस साल मलेरिया की फसल अच्छी नहीं है।

३५५

बाबू जी—रामू ! जरा स्टेशन तक चले आओ ; इस गाडी से मेरी सास आने वाली हैं। इसके लिए मैं तुम्हें चार आने दूँगा।

रामू—बाबू जी ! अगर वे न आईं तो ?

बाबू जी—तो तुम्हें आठ आने दूँगा।

३५६

मेजिस्ट्रेट—तुम दया के पात्र नहीं हो, क्योंकि यह तुम्हारा पहला अपराध नहीं है।

अपराधी—पर मेरे वकील का यह पहला ही मुकदमा है हजूर !

३५७

सायङ्काल का समय था। पार्क में बैठ कर चार-पाँच अङ्गरेज-छोकरियाँ वार्तालाप में अपने भावी पतियों के गुण-दोष की विवेचना कर रही थीं। उनमें से सबसे बड़ी ने कहा—पर यह निश्चित है कि मैं उस पुरुष की अर्द्धाङ्गिनी कदापि नहीं बनूँगी, जो बहुत जोर से खर्राटे लेता होगा।

उनमें से जो सबसे छोटी थी, वह बड़ी चञ्चल थी ; उसने कहा—पर उसके पास सोए बिना तुम इस बात का पता कैसे लगा पाओगी बहिन ?

३५८

गवैया—बाबू जी ! कल मेरे यहाँ एक दुर्घटना हो गई !

बाबू जी—सो क्या ?

गवैया—कल मैं घर में गा रहा था, उसी समय सहसा मेरा बहरा भाई मूर्छित होकर गिर पड़ा।

बाबू जी—ओहो! कहीं उसका बहिरापन सहसा दूर तो नहीं हो गया था।

३५९

सेठ जी कन्यादान लेने के लिए वेदी पर बैठे। पुरोहित ने ज्योंही आपके हाथ में जल और चावल दिए, त्योंही आप काँप उठे, और ऐसा प्रतीत हुआ मानो सेठ जी को कठिन पीड़ा हो रही हो। पुरोहित बेचारा घबड़ा गया, उसने कहा—क्यों-क्यों? क्या बात है सेठ जी? आपकी तबीयत तो ठीक है?

सेठ जी ने धीमे स्वर में उत्तर दिया—कुछ नहीं, आज मैं जीवन में पहली बार दान कर रहा हूँ, और कुछ बात नहीं है।

३६०

माता—देखो रामू! अब मैं फिर कभी तुम्हें इस प्रकार लड्डू चुराते हुए न पकड़ पाऊँ, इसका ध्यान रखना।

पुत्र—मैं भरसक ऐसी ही कोशिश करूँगा।

३६१

माता ने रोगी बालक के कमरे में आकर देखा कि वह

आँखें बन्द किए हुए लेटा है। माँ ने कहा—क्या सो गया रे रामू ?

रामू—हाँ माँ ! और डॉक्टर ने कह दिया है कि सोते हुए दवा न खिलाई जाय।

३६२

युवती श्यामा ने बहुत सोच-विचार कर केतकी से पूछा—क्यों बहिन, स्त्रियाँ अपने पतियों को प्राय "प्राण-नाथ" कह कर सम्बोधन करती हैं, पर जिन बेचारियों के पतियों का नाम ही "प्राणनाथ" होगा, वे अभागिनी क्या कह कर पुकारती होंगी ? पति का नाम तो ले नहीं सकतीं।

केतकी ने लजा कर कहा—"कल पूछ कर बताऊँगी।" केतकी के पति का नाम था प्राणवल्लभ।

३६३

"कुमुद, तुम बड़े बदमाश हो गए हो। तुमसे मना किया था कि अपना अमरूद दोपहर में खाना, इस समय सर्दी है, पर तुमने नहीं माना, आखिर खा ही डाला।"

कुमुद ने सिर खुजलाते हुए माँ की ओर दया निगाह से देख कर कहा—नहीं अम्माँ ! मैंने तुम्हारी आज्ञा नहीं टाली है। यह तो मैं (छोटी बहिन मुन्नी की ओर इशारा करके) इसका अमरूद लेकर खा रहा हूँ और मैंने अपना वाला

इसे दे दिया है, तुमने इस अमरूद के लिए थोडे ही मना किया था !

३६४

मिर्ज़ा हिमाकत बेग बडे अव्वल दर्जे के अफीमची थे। अपनी जिन्दगी में यह पहली बार सफर करने को निकले थे। एक सराय में डेरा डाला, लोगों ने कहा—"ज़रा होशियार रहिएगा, यहाँ चोर बहुत हैं।" बेचारे काँप गए। अफ़ीम का सारा नशा किरकिरा हो गया। पौ फटते ही घोडे पर सवार होकर अपने नौकर गफूर के साथ भागे। रास्ते में पिनक आ गई। एकाएक चिल्ला उठे—"गफूर ! गफूर ! मेरा घोडा कहाँ गया ?"

ग़फूर ने आश्चर्य प्रकट करते हुए कहा—हुजूर, घोड़े पर तो आप सवार हैं।"

मिर्ज़ा साहब ने ओंठ चबाते हुए कहा—क्या मुज़ायका है ! बेटा, सफर में हमेशा होशियार रहना चाहिए !

३६५

"कुछ न पूछो मित्र, बडा परेशान हूँ। जी में आता है कि आत्म-हत्या करके जान दे दूँ !"

"आखिर हुआ क्या ? खेरियत तो है ?"

"अजी कहाँ की खैरियत ! घर छोड कर भाग जाने की इच्छा होती है, आज चार रात सोए बिना गुजर गए !"

"सोए बिना ? इसका कारण ?"

"सुन कर तुम्हें भी बड़ा दुःख होगा।"

"अरे भाई, मुझसे कहो भी तो!"

"अच्छा सुनो। परसों रात को मैं और मेरी स्त्री सोए थे। आधी रात के करीब बाहर कुछ खटका हुआ।"

"खटका हुआ तो इससे क्या? क्या चोर था?"

"मैं तो नहीं, पर बीबी साहिबा उठ बैठीं और बोलीं—'बाहर खटका हो रहा है, कोई चोर है।' मैंने कहा—'तुम बड़ी अहमक हो! चोर जब आते हैं तो खटका ही तो नहीं होता—किसी को पता भी नहीं लगता और वे अपना काम करके चले जाते हैं।'"

"तब तो तुम्हारी स्त्री बेखटके सो गई होगी, क्यों?"

"अजी कहाँ! अब रोज खटका तो होता नहीं, वह समझती है कि रोज ही चोर आते हैं। रात भर स्वयं भी जागती है और मुझे भी जगाती है!!

३६६

आठ वर्ष की एक बालिका से उसकी पड़ोसिन ने पूछा—सरला! मैंने सुना है कि तू सोने के पहले बहुत देर तक प्रार्थना करती है। क्या यह ठीक है?

"जी हाँ!"

"भला बता तो, प्रार्थना में क्या क्या कहती है?"

सरला ने नीची निगाह करके भोलेपन से कहा—कुछ

नहीं। केवल बार-बार यही कहती हूँ कि कल अम्माँ मुझे मारें नहीं।

३६७

पाँच वर्ष की बालिका पहिले ही दिन स्कूल से पढ़ कर आई और माँ से बोली—"मुझे लिखना खूब आ गया।" माँ ने प्रेम से बच्ची को गोद में बिठा कर कहा—"लिख तो सही।" बच्ची ने सदा की भाँति स्लेट पर लकीरें फेर दीं।

माँ ने कहा—यह क्या लिख मारा, जरा पढ़ तो सही।

बालिका ने कहा—अभी पढ़ना थोड़े ही सीखा है।

३६८

एक जज साहब जूरी को मुकदमा समझा रहे थे। उसी समय बाहर बड़े जोर से एक गदहा बोल उठा। जज साहब को कुछ नागवार मालूम हुआ और उन्होंने कहा—यह क्या है?

उसी समय एक सज्जन ने, जिनसे जज साहब थोड़ी देर पहले बिगड़ चुके थे, उठ कर कहा—कुछ नहीं, श्रीमान्! यह केवल अदालत की प्रतिध्वनि है॥

३६९

पुत्र—माँ! बदला किसे कहते हैं?

माँ—जब तुम्हारे पिता मुझे डाँटते हैं, तब मैं उन्हें झाड़ू से मारती हूँ—यही बदला लेना है।

३७०

एक जुलाहे की औरत बीमार पड़ी। जब जुलाहा अपना कपड़ा बेच कर शाम को लौटता, तब वह उसकी खाट के पास बैठ जाता और फूट-फूट कर रोने लगता।

एक दिन एक औरत, जो पास ही में रहती थी, आई और कहने लगी—भैया, रञ्ज मत करो, खुदा चाहेगा तो यह जल्दी अच्छी हो जायगी।

उसने कहा—बहिन! मैं ठहरा काम-काजी आदमी। सुबह होते ही मैं कपड़ा बेचने चला जाऊंगा। इस वक्त मुझे कुछ काम नहीं है, मेरी फुरसत का वक्त है, इसलिए मैं मन भर के रो रहा हूँ। कौन जाने फिर ऐसा मौका मिले या न मिले, और यह तुम जानती ही हो कि इस बेचारी का मेरे सिवाय रोने वाला कोई नहीं है।

३७१

पुत्र—बाबू जी! तुमने एक दिन कहा था कि अपने से जो छोटा हो, उसे मारना नहीं चाहिए।

पिता—हाँ! कहा तो था।

पुत्र—तो तुम मास्टर को एक चिट्ठी लिख दो कि वह मुझे न मारा करें।

३७२

एक मित्र—वास्तव में यह कहावत ठीक है कि जो अज्ञानी होता है, वह सुखी होता है।

दूसरा मित्र—सो तो मुझे मालूम नहीं, पर मित्र! तुम तो बड़े सुखी दिखाई पड़ते हो।

३७३

डॉक्टर—तुम्हारे रोग का एक ही इलाज है—विश्राम! तुम कुछ मत करो और शान्त होकर बैठे रहो।

रोगी—डॉक्टर! कोई और उपाय बताओ, यह उपाय तो मैं जन्म से करता रहा हूँ, जरा भी फायदा नहीं हुआ!

३७४

प्रोफ़ेसर महोदय अपने अध्ययन में तल्लीन थे, उसी समय उनकी श्रीमती जी ने चिल्ला कर कहा—क्या करूँ! मेरी तो नाक में दम है। श्यामू ने सब रोशनाई पी ली।

प्रोफेसर साहब ने पुस्तक पर से बिना सिर उठाए ही कहा—कुछ हर्ज नहीं, पेन्सिल से लिख लो!

३७५

एक मित्र—मुझे ५०) रुपए उधार दे दो।

दूसरा मित्र—लो, यह २५) रुपए हैं।

पहला मित्र—मैंने तो ५०) रुपए माँगे थे।

दूसरा मित्र—देखो भाई, न्याय की बात तो यही है कि आधा मैं खोऊँ और आधा तुम!

३७६

एक साहब जरा मजे में थे। सुरा देवी का उन पर अधिक प्रभाव हो गया था। ऐसी दशा में झूमते हुए आप डाकखाने पहुँचे और डाक बाबू से कहने लगे—मेरी कोई चिट्ठी है?

डाक-बाबू—आपका बॉक्स नम्बर क्या है?

साहब—कुछ नहीं।

डाक बाबू—आपका नाम क्या है?

साहब—हिश्! कैसे बेवकूफ हो, वह तो चिट्ठी पर लिखा ही होगा।

३७७

स्त्री—यह बात मैंने अनुभव की है कि स्त्रियों की अपेक्षा पुरुषों के सिर के बाल शीघ्र गिर जाते हैं, क्योंकि उन्हें मस्तिष्क से अधिक काम लेना पड़ता है।

पुरुष—ठीक है, यही कारण है कि स्त्रियों के दाढ़ी नहीं निकलती, क्योंकि स्त्रियों की ठोडी से बहुत काम लिया जाता है।

३७८

बच्चे शैतान तो होते ही हैं और उनकी शैतानी उस समय बहुत बढ़ जाती है, जब उनके दर्जे में कोई अध्यापक नहीं होता है। ऐसे ही एक कक्षा के लड़के बहुत शोर

मचा रहे थे। उनकी आवाज सुन कर क्रोध मूर्त्ति अध्यापक जी ने कक्षा में प्रवेश किया। रोष से भरे हुए स्वर में उन्होंने लड़कों से पूछा—इस कक्षा में कितने लड़के हैं?

लड़के—उन्नीस।

अध्यापक—और उनमें से मूर्ख कितने हैं?

लड़के—बीस।

३७९

अध्यापक—रामू! एक बटा पच्चीस (१/२५) क्या होता है।

शिष्य—मुझे नहीं मालूम।

अध्यापक—मान लो तुम्हारे यहाँ २५ लड़के अतिथि हैं और तुम्हारे पास केवल एक सेब है, तो ऐसी दशा में तुम क्या करोगे?

शिष्य—मैं सेब को छिपा रक्खूँगा और जब लड़के चले आयँगे तब खा लूँगा।

३८०

पति—आज मैने एक पत्रिका में पढ़ा है कि मूर्ख पुरुष सुन्दर रमणी से विवाह करते हैं।

पत्नी—पर तुम तो सदा मेरी सुन्दरता की ...ते हो।

३८१

एक सम्पादक महोदय अपने अध्ययन में निमग्न थे। उसी समय दासी ने आकर बालक के जन्म का शुभसमाचार देते हुए कहा—भगवान् ने आपके घर में एक सुन्दर बालक भेजा है।

सम्पादक जी ने उसी प्रकार ध्यान-मग्न अवस्था में कहा—अच्छा! उससे पूछो कि वह क्या चाहता है?

३८२

रोगी—डॉक्टर साहब! मेरे बहरे होने का कुछ इलाज कीजिए।

डॉक्टर—क्या तुम विवाहित हो?

रोगी—जी हाँ।

डॉक्टर—तब तुम क्यों इलाज कराते हो?

३८३

बच्चे की तबीयत अच्छी नहीं थी। माता ने कमरे में प्रवेश करके धीरे से कहा—लल्लू! क्या तुम जाग रहे हो?

पुत्र—नहीं अम्माँ! और डॉक्टर ने यह कह दिया है कि बच्चे को जगा कर दवाई मत पिलाना।

३८४

बेटा—बाबू जी! महाराजा किसे कहते हैं?

मचा रहे थे। उनकी आवाज सुन कर क्रोध मूर्ति अध्यापक जी ने कक्षा में प्रवेश किया। रोष से भरे हुए स्वर में उन्होंने लडकों से पूछा—इस कक्षा में कितने लडके हैं ?

लडके—उन्नीस !

अध्यापक—और उनमें से मूर्ख कितने हैं ?

लडके—बीस !

३७९

अध्यापक—रामू ! एक बटा पच्चीस (१/२५) क्या होता है।

शिष्य—मुझे नहीं मालूम !

अध्यापक—मान लो तुम्हारे यहाँ २५ लडके अतिथि हैं और तुम्हारे पास केवल एक सेब है, तो ऐसी दशा में तुम क्या करोगे ?

शिष्य—मैं सेब को छिपा रक्खूँगा और जब लडके चले जायँगे तब खा लूँगा।

३८०

पति—आज मैंने एक पत्रिका में पढा है कि मूर्ख पुरुष सुन्दर रमणी से विवाह करते हैं।

पत्नी—पर तुम तो सदा मेरी सुन्दरता की प्रशंसा करते हो।

३८१

एक सम्पादक महोदय अपने अध्ययन में निमग्न थे। उसी समय दासी ने आकर बालक के जन्म का शुभसमाचार देते हुए कहा—भगवान् ने आपके घर में एक सुन्दर बालक भेजा है।

सम्पादक जी ने उसी प्रकार ध्यान-मग्न अवस्था में कहा—अच्छा! उससे पूछो कि वह क्या चाहता है?

३८२

रोगी—डॉक्टर साहब! मेरे बहरे होने का कुछ इलाज कीजिए।

डॉक्टर—क्या तुम विवाहित हो?

रोगी—जी हाँ।

डॉक्टर—तब तुम क्यों इलाज कराते हो?

३८३

बच्चे की तबीयत अच्छी नहीं थी। माता ने कमरे में प्रवेश करके धीरे से कहा—लल्लू! क्या तुम जाग रहे हो?

पुत्र—नहीं अम्माँ! और डॉक्टर ने यह कह दिया है कि बच्चे को जगा कर दवाई मत पिलाना।

३८४

बेटा—बापू जी! महाराजा किसे कहते हैं?

पिता—बेटा ! महाराजा उसे कहते हैं, जिसके शब्द ही कानून हों, जिसके कहने को कोई टाल न सके, और जिसकी आज्ञा का पालन करना सबके लिए आवश्यक हो।

बेटा—तो बाबू जी ! अम्माँ क्या महाराजा हैं ?

३८५

एक बार एक दरिद्र ब्राह्मण एक बहुत बड़े धनाढ्य के पास गया और उसने अपने दुःख की कथा कुछ ऐसी करुण भाषा में कही कि धनाढ्य के भी आँखों में आँसू आ गए। ब्रह्मदेव को यह देख कर कुछ तसल्ली हुई और उन्होंने समझा कि धनाढ्य कुछ न कुछ उन्हें अवश्य देगा। उसी समय धनाढ्य ने अपने नौकर को बुला कर कहा—नत्थू ! इस अभागे आदमी को यहाँ से निकाल दो। इसने तो मेरे हृदय के टुकड़े-टुकड़े कर दिए हैं !

३८६

मालिक—देखो जी, मेरे सन्दूक में से १०) गायब हैं। इस सन्दूक की एक चाबी मेरे पास है और एक तुम्हारे। तब यह क्या मामला है ?

नौकर—५) आप मुझसे ले लीजिए और पाँच आप दे दीजिए और इस मामले को यहीं समाप्त कर दीजिए। ऐसा न हो दूसरों को खबर हो जाय।

३८७

एक मित्र—क्या तुम स्वप्नों में विश्वास करते हो?

दूसरा मित्र—विवाह होने से पहले करता था, पर अब नहीं।

३८८

डाइनामाइट (Dynamite) एक प्रकार का विस्फोटक पदार्थ है, जो आग लगते ही भभक उठता है। एक सिपाही ऐसे ही एक डाइनामाइट के गोदाम के पास बैठा-बैठा आनन्द से सिगरेट पी रहा था। उसी समय उसका अफसर वहाँ आ पहुँचा और उसने डाँट कर उससे कहा—क्या कर रहा है रे मूर्ख! तुझे मालूम नहीं कि अभी उस दिन एक आदमी तेरी ही तरह यहाँ बैठा सिगरेट पी रहा था और उसके कारण डाइनामाइट में आग लग गई थी, जिसका परिणाम यह हुआ था कि १२ आदमियों की मृत्यु हो गई!!

सिपाही—पर इस समय वैसी घटना नहीं हो सकती।

अफसर—क्यों?

सिपाही—क्योंकि यहाँ आप और मैं दो ही हैं!

३८९

एक वक्ता महोदय अपनी वक्तृता दे रहे थे। विषय शुष्क था और वक्ता महोदय भी इतने पण्डित नहीं

थे कि उसे रोचक बना सकते। इसीलिए श्रोताओं की सख्या भी थोडी थी। आध घण्टे तक भाषण कर चुकने के उपरान्त उन्होंने श्रोताओं को सम्बोधन करके कहा—महोदय! मुझे भय है कि मैंने आपका बहुत समय ले लिया है और आपको रोके रक्खा है।

उसी समय श्रोताओ की ओर से हास्य-ध्वनि सुनाई दी और उनमें से एक ने कहा—आप भाषण किए जाइए। अभी पानी बरस रहा है, हम लोग जा ही नहीं सकते।

३९०

प्रेमिका—क्या तुम मुझसे प्रेम करते हो?

प्रेमी—कैसा कुछ! मैं तो तुम्हारे प्रेम में उन्मत्त हूँ।

प्रेमिका—क्या तुम मेरे लिए प्राण विसर्जन कर सकते हो?

प्रेमी—नहीं, मेरा तो अमर, अक्षय-प्रेम है।

३९१

पत्नी रोग-शय्या पर पडी थी। एक दिन एकान्त में उसने अपने पति से पूछा—यदि मैं मर गई तो तुम क्या करोगे?

पतिदेव ने गम्भीर स्वर में उत्तर दिया—अजी, मुझे तो यह चिन्ता है कि तुम जीती रहीं तो मैं क्या करूँगा।

३९२

पत्नी—(पड़ोसी से) मालूम नहीं क्या बात है कि मैं

अपने पति को बहुत कुछ समझाती हूँ, पर वे रात को मकान पर रहते ही नहीं हैं। मैं सब कुछ करके हार गई, पर उनका रात का जाना बन्द नहीं हुआ।

पड़ोसी—एक बात और कर देखो। तुम स्वयं रात को बाहर जाना शुरू कर दो।

३९३

मुसाफिर—(रेलगाड़ी में एक लड़की से) बेटी! तुम्हारा उम्र क्या है?

लड़की—क्या आप गार्ड हैं?

मुसाफिर—नहीं।

लड़की—तब मेरी उम्र १२ वर्ष की है।

३९४

गृहिणी—(चोर से) यदि तुम शीघ्र ही यहाँ से नहीं चले जाओगे, तो मैं अपने पति को बुलाऊँगी।

चोर—अजी! मुझे इसकी चिन्ता नहीं है, क्योंकि उनके सामने जब मैं एक दिन आया था, तब उन्होंने आपको बुलाने की धमकी दी थी।

३९५

एक मित्र—क्या करूँ? मेरी स्त्री दस्तानों पर बड़ा रुपया खर्च करती है। उसके दस्तानों का बिल चुकाते-चुकाते तो मेरे नाक में दम हो गया है।

दूसरा मित्र—मेरा कहा मानो, उन्हें एक हीरे की अँगूठी मोल ले दो।

३९६

पत्नी—नहीं जी, कल से मैं आपको लिखने वाली मेज पर भोजन नहीं करने दूँगी।

प्रोफेसर साहब—क्यों प्राणेश्वरी! इसका कारण?

पत्नी—कारण? कारण यह है कि कल आप दूध से लिखने लगे थे और रोशनाई पी गए थे।

३९७

एक गँवार आदमी का मित्र नगर में रहता था। उस मित्र के पास एक मोटर थी। एक बार गँवार देवता अपने शहरी मित्र से मिलने आए। शहरी मित्र सायङ्काल को उन्हें मोटर पर बिठा कर हवा खिलाने ले चला और शहर के बाहर की सडक पर पहुँच कर उसने मोटर खूब तेज कर दी। मोटर अभी थोडे ही दूर गई होगी कि वह रास्ते के एक ओर लगे हुए पेड से टकरा गई। सौभाग्य से चोट किसी के नहीं आई, पर मोटर का इञ्जन अवश्य बिगड गया। गँवार देव धीरे से मोटर से उतरे और मुँह बना कर गम्भीरतापूर्वक कहने लगे—"सवारी तो अच्छी है, पर यह तो बताओ, जहाँ पेड नहीं होते होंगे, वहाँ तुम इसे कैसे रोकते होगे!" मित्र के पास इसका कोई उत्तर नहीं था।

३९८

रामू—श्यामू ! तुम्हारा यह कोट तो बहुत ही अच्छा सिला है। क्या तुम उस दर्जी का पता बता सकते हो जिसने यह कोट सिया है ?

श्यामू—हाँ, बता क्यों नहीं सकता। पर एक शर्त यह है कि वह चाहे कितना ही पूछे, तुम मेरा पता उसे मत बताना।

३९९

ग्राहक—क्यों जी ! तुम नित्य कितनी मिठाई बेच लेते होगे ?

हलवाई—यही कोई एक मन।

ग्राहक—मैं तुम्हें ऐसा उपाय बता सकता हूँ, जिससे तुम डेढ़ मन नित्य बेच लिया करो।

हलवाई—सचमुच ! वह क्या उपाय है ?

ग्राहक—और कुछ नहीं, बस पूरा मन तोला करो।

४००

माता—क्यों जी, तुम फिर लड़ने लगे। नतीजा यह हुआ कि तुम अपना एक दाँत खो बैठे।

पुत्र—कहाँ, मैं तो नहीं खो बैठा। यह मेरी जेब में है।

४०१

पिता—तुमने अपना गणित का पर्चा कैसा किया ?

पुत्र—बहुत अच्छा।

पिता—तुम्हारे कितने सवाल अशुद्ध हैं?

पुत्र—केवल एक।

पिता—और सब कितने थे?

पुत्र—बारह।

पिता—वाह! बहुत अच्छा। तो तुम्हारे ११ सवाल ठीक हैं।

पुत्र—नहीं जी, उन्हें तो मैंने किया ही नहीं।

४०२

पुत्र—क्यों वैद्य जी, बाबू जी की अवस्था भयङ्कर तो नहीं है?

वैद्य—बिलकुल नहीं। यदि ऐसा होता, तो अब तक मैंने अपनी दवाई के दाम कभी के वसूल कर लिए होते!

४०३

पिता—मैं जब बालक था, तब कभी झूठ नहीं बोलता था।

पुत्र ने सरल भाव से पूछा—बाबू जी! आपने झूठ बोलना प्रारम्भ कब से किया?

४०४

किरायेदार—जब मैं मकान छोड़ने लगा, तब मेरा पहिला मालिक मकान बहुत रोता था?

नया मालिक-मकान—पर आप निश्चिन्त रहिए, मैं नहीं रोने का, मैं तो एक महीने का किराया पहले ही जमा करा लेता हूँ।

४०५

सेठ जी—हाँ, तो इसका तुम्हारे पास क्या सबूत है कि तुमने सेठ घनश्यामदास के यहाँ ६ महीने भोजन बनाया है?

रसोइया—मेरे पास ऐसे दस पाँच बर्तन हैं, जिन पर उनके नाम खुदे हुए हैं।

४०६

पुत्र—पिता जी, खाली जेब किसे कहते हैं?

पिता—तुम्हारी माता का हाथ पड़ जाने के पश्चात् मेरी जेब को।

४०७

एक व्यक्ति अपनी मोटर बेचना चाहता था। एक दिन एक ग्राहक आया। उसको गाड़ी दिखा कर यह व्यक्ति बोला—देखिए, इस गाड़ी की काया पलट कर दी है—अब कौन कह सकता है कि यह पुरानी गाड़ी है?

ग्राहक गाड़ी देख भाल कर बोला—मालूम होता है, इसका हर एक पुरजा आपने बदला है। ऐसी दशा में

यदि मेकर के स्थान पर अपना नाम दे दें तो अधिक अच्छा हो।

४०८

एक व्यक्ति हलवाई की दूकान पर जाकर बोला—तुम ऐसा हलवासोहन बना सकते हो, जिस पर मेरा नाम लिखा हो?

हलवाई ने कहा—हाँ!

वह व्यक्ति—तो बना रखना, कल मैं आकर देखूँगा।

दूसरे दिन उसने हलवासोहन देख कर कहा—नाम कुछ सुन्दर नहीं बना—खूब अच्छा बनाओ।

तीसरे दिन उसने हलवासोहन देख कर पसन्द किया।

हलवाई ने पूछा—बाँध दूँ, ले जाइएगा?

वह व्यक्ति—ले कहाँ जाऊँगा, यहीं बैठ कर खाऊँगा।

४०९

स्वामी—देखो, मैं बड़ा मेहनती आदमी चाहता हूँ। किसी समय में मैं स्वयं बड़ा मेहनती था। लगातार दस साल तक मैंने दस घण्टे रोज काम किया है।

नौकर—आप किस जेल में थे? मैं नैनी में रहा हूँ।

४१०

"क्यों जी, इस समय क्या बजा होगा?

"बारह बजे हैं।"

"बारह ! नहीं, ज्यादा बजे होंगे।"

"बारह से ज्यादा तो कभी बजते ही नहीं।"

४११

"धैर्य से मनुष्य सब कुछ कर सकता है।"

"क्या धैर्य से छलनी में पानी रक्खा जा सकता है ?"

"हाँ, यदि पानी के जम जाने तक धैर्य रक्खा जावे।"

४१२

"रामलाल का पहला उपन्यास प्रकाशित हो रहा है।"

"उपन्यास का नायक कौन है ?"

"जहाँ तक मेरा अनुमान है, नायक प्रकाशक ही होगा।"

४१३

हिन्दुस्तान से लौट कर एक अङ्गरेज परिवार विलायत गया। वहाँ बच्चा खिलाने के लिए एक अङ्गरेज दाई रक्खी गई। दाई ने बच्चे की माता से कहा—बच्चा मेरे पास नहीं रहता, रोता है।

बच्चे की माता बोली—ठीक है, हिन्दुस्तान में इसे जो दाई खिलाया करती थी वह काली थी। अच्छा तू अपने मुँह पर थोड़ी जूते की काली पॉलिश मल ले।

४१४

एक अमेरिकन करोड़पति लन्दन की सैर करने

गया। लन्दन का चिड़िया-घर देख कर उसके दो बालक मचल गए, अतएव वह चिड़िया-घर के संरक्षक के पास जाकर बोला—मेरे बच्चों को तुम्हारा चिड़िया-घर बहुत पसन्द आ गया है। यदि तुम इसे बेचना चाहो तो मैं खरीदने को तैयार हूँ।

संरक्षक ने अमेरिकन को सिर से पैर तक देख कर, किञ्चित् मुस्कराते हुए कहा—चिड़िया-घर बेचा तो नहीं जा सकता, परन्तु यदि आपके बच्चे चिड़िया-घर को इतना पसन्द करते हैं, तो मैं इतना कर सकता हूँ कि उन्हें चिड़िया घर में ही रख लूँ।

४१५

क्यों साहब, आपके साहबजादे आजकल कहाँ हैं?

"जेल में।"

"हैं! जेल में?"

"जी हाँ, वहाँ २०) महीने का क्लॉर्क है।"

४१६

पुत्र—पिता जी, आप जो मेरे लिए हवाई बन्दूक लाए थे, वह कहाँ से लाए थे?

पिता—याद नहीं कि कहाँ से लाया था।

पुत्र—और वह गेंद?

पिता—यह भी याद नहीं कि किस दूकान से लाया था।

पुत्र—पिता जी, आपको कोई बात याद नहीं रहती। आप थोड़े दिन मेरे मास्टर साहब से पढ़ लीजिए, तो फिर आपको याद रहने लगे।

४१७

डॉक्टर—(घायल) से तुम अच्छे तो हो जाओगे, पर काम करने योग्य नहीं रहोगे।

आलसी घायल—यह तो बड़ा शुभ समाचार है।

४१८

"आज मैंने एक बड़ी सुन्दर स्त्री देखी।"

"उसकी सूरत शक्ल कैसी थी?"

"रेशमी साड़ी और गुलाबी कमीज़ पहने थी।"

४१९

नौकर—मुझे आपके यहाँ काम करते हुए दो साल हो गए, मैं दो आदमियों का काम करता रहा हूँ, अब आप मेरी तनख्वाह बढ़ाइए।

मालिक—तनख्वाह तो मैं बढ़ा नहीं सकता, पर जिन दो आदमियों का तुम काम करते रहे हो उनके नाम पता दो तो मैं उन्हें खड़े-खड़े निकाल सकता हूँ।

४२०

"तुम्हें मालूम है कि कल एक जहाज डूबने की खबर आई है?"

"मालूम क्या, मैं ही तो एक आदमी हूँ, जो बचा हूँ।"

"कैसे ?"

"मैं उस जहाज पर जाने वाला था, पर देर हो जाने के कारण मुझे वह नहीं मिला।"

४२१

किरायदार—देखिए जनाब, रात भर कमरे की छत टपकती रही, तमाम कपड़े भीग गए।

मकानदार—छत टपकती रही! यह कैसे? यह छत कभी नहीं टपक सकती।

किरायदार—तो शायद अपनी दुर्दशा पर रोती रही हो।

४२२

"कल तुमने जो दूध दिया था, वह दूध नहीं, पानी था।"

दूध वाला—पानी होता तो सफेदी कैसे होती, पानी में कहीं सफेदी होती है?

४२३

दो बहरे रास्ते में मिले। एक ने कहा—कहो, क्या घूमने जा रहे हो?

दूसरा बहरा—नहीं, घूमने जा रहा हूँ।

पहला बहरा—अच्छा, मैंने समझा शायद घूमने जा रहे हो।

४२४

पुत्र—पिता जी, कल मैंने एक स्वप्न देखा। मैंने देखा कि मेरा विवाह हो रहा है। अकस्मात् मैं उठ कर खड़ा हो गया, और मैंने कहा—मैं विवाह नहीं करूँगा, फिर मैंने विवाह नहीं किया। इसका क्या अर्थ है ?

पिता—इसका अर्थ यह है कि सोते में तुम्हारी बुद्धि जागते की अपेक्षा अधिक ठीक रहती है।

४२५

मोहन—अरे भाई सोहन, हमने सुना है कि तुम्हारे उस दिन कोड़े लगे थे ?

सोहन—सच है, मुझे यह तो उसी समय मालूम हो गया था।

४२६

माली—बाबू जी, नत्थूराम की बकरी आज फिर अपनी बगिया में घुस आई है।

बाबू जी—तो शोर क्यों मचाता है, एक बर्तन ले जा और उसे दुह ले।

४२७

"भाई साहब, कल रात को मुझ पर बुरी बीती। तीन-चार घण्टे तक बड़े घर की हवा खानी पड़ी।"

"क्यों-क्यों, हुआ क्या ?"

"होता क्या, रात को सपना देखा था। मानो मैं जेल में बैठा चक्की पीस रहा हूँ और जेलर साहब सटासट हण्टर फटकार रहे हैं।"

४२८

डॉक्टर—देखिए, इस थर्मामीटर को अपनी स्त्री की जबान के तले रख दीजिएगा और उन्हें कह दीजिएगा कि आधे मिनट तक मुँह न खोलें।

पति—कृपया यदि आधे घण्टे वाला थर्मामीटर हो तो दे दें।

४२९

सम्पादक—(एक नवीन लेखक से) आप ऐसे लेख लिखने की चेष्टा करें, जिसकी भाषा ऐसी सरल तथा सुबोध हो कि प्रत्येक मूर्ख से भी मूर्ख मनुष्य उसे भली प्रकार समझ सके।

नवीन लेखक—तो इस लेख में आपको क्या समझ में नहीं आया, महाशय?

४३०

घड़ीसाज—क्या आपकी घड़ी गिरते ही रुक गई?

बाबू साहब—(हँस कर) रुकती नहीं तो क्या भाग जाती?

४३१

वृद्ध—जब मैं बालक था तो बीस-पच्चीस मील पैदल चलने की तनिक भी परवाह नहीं करता था।

भतीजा—(मोटर का हैंडिल घुमाते हुए) और न मैं पैदल चलने की परवाह करता हूँ।

४३२

पत्नी—एक मिनट में कितने सेकण्ड होते हैं?

पति—तुम्हारा मतलब किस मिनट से है? क्या सचमुच का मिनट अथवा तुम्हारे "एक मिनट ठहरो, अभी आती हूँ" वाले मिनटों का मिनट?

४३३

एक स्कूल इन्सपेक्टर ने प्राय चार घण्टे स्कूल का निरीक्षण किया और खुश होकर बोले—कोई लड़का मुझसे कुछ पूछना चाहता है?

एक लड़के ने उठ कर पूछा—आप स्कूल से कब जायँगे?

४३४

बाबू—(एक भिक्षुक से) क्या तुम्हें पैसा कौड़ी माँगने में लज्जा नहीं आती?

भिक्षुक—बाबू! बिना माँगे क्या करूँ!

माँगे कुछ ले लिया था, जिसने छ महीने बड़े घर की हवा खानी पड़ी थी।

४३५

अध्यापिका—(छोटी बालिका से) यदि एक काम को अकेले तुम्हारे पिता तीन घण्टे में कर सकते हों और तुम्हारी माँ भी तीन घण्टे में कर सकती हों, तो उसी काम को दोनों मिल कर कितने समय में करेंगे?

राधा—साढ़े चार घण्टे में।

अध्यापिका—तीन घण्टे में करेंगे कि साढ़े चार घण्टे में? तू बड़ी मूर्खा है।

राधा ने गम्भीर होकर उत्तर दिया—मेरे उत्तर में डेढ़ घण्टा वह भी तो शामिल है, जो दोनों आपस के झगड़ने में लगा देंगे।

४३६

अध्यापक—(लड़कों से) देखो, बिना किसी बात को अच्छी तरह सोचे, झट से उत्तर दे देना मूर्खता होती है। अपना नियम कर लो—किसी आवश्यक बात का उत्तर देने से पूर्व ५० तक गिन कर, तब उत्तर दिया करो। यदि कोई बात विशेष गम्भीर और आवश्यक हो, तो एक से १०० तक गिनने का निश्चय कर लो।

दूसरे रोज अध्यापक महोदय चिमनी के पास खड़े पढ़ा रहे थे कि सभी लड़कों ने एक साथ गिनती शुरु कर

दूसरी स्त्री—हाँ बहिन, जब से मैं अपने हाथ से खाना बनाती हूँ, तब से मेरे पति पहले से आधा ही खाना खाते हैं।

४४५

पहला मित्र—क्यों मोहन, अपनी पत्नी के भाग जाने पर इतने दुःखी क्यों होते हो? जाने भी दो।

दूसरा मित्र—नहीं, इसका दुःख नहीं है।

पहला मित्र—(घबरा कर) फिर तुमको किस बात का दुःख है?

दूसरा मित्र—वह कम्बख्त कहीं फिर न चली आवे।

४४६

पुत्री—(अपनी माता से) माँ, स्कूल की पढ़ाई समाप्त हो गई। अब मैं कॉलेज जाऊँगी।

माता—नहीं, अब तू विवाह योग्य हो गई है, फिर पुरुष तो इस बात की जरा भी पर्वाह नहीं करते कि उनकी स्त्री पढ़ी-लिखी है भी या नहीं?

पुत्री—माँ, तुममें यही तो बड़ा भारी दोष है। तुम सब पुरुषों को मेरे पिता के समान ही समझती हो।

४४७

"मैं तुम्हारे प्रेम में जल रहा हूँ।"

"अरे भाई, तुम क्यों ईंधन हो रहे हो?"

४४८

सखी—(अपनी बूढ़ी धोबिन सखी से) बहिन, बधाई। सुना है, तुमने फिर विवाह कर लिया है। अब कपड़ा धोना तो छोड़ ही दिया होगा?

धोबिन—अरे नहीं! इसीलिए तो शादी की है। गदहा मर गया था, घाट से कपड़े लाद कर लाने वाला कोई था ही नहीं।

४४९

माता—(पुत्र से) बेटा! आज तुम्हारी मामी आ रही हैं, हाथ मुँह धो लो और कपड़े बदल लो।

पुत्र—और जो वह न आईं तो ?

४५०

मेजिस्ट्रेट—(अभियुक्त से) तुम बरी किए गए।

अभियुक्त—क्षमा कीजिएगा, आपको मेरे पीछे व्यर्थ कष्ट उठाना पड़ा।

समाप्त